

अधूरी भिव्यक्ति

... एक काव्य संग्रह

भाग - १

सत्येन्द्र कुमार

सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय, शून्य सरीखा मेरा परिचय

हृदय की पवित्र संवेदनाओं के साथ, माता-पिता का चरण वंदन
नाना-नानी, दादा-दादी की, चिर स्मृतियों को यह काव्य समर्पण

सत्येन्द्र कुमार

E-mail: satendra.kumar301@gmail.com

Voice/Whatsapp: +91-9586546270

मेरे गीतों के लफ़्ज़ों तुम, न बनना आँख के आँसू
मगर इतना असर करना, कि दिल को बात जाए छू

कभी दर्द से महरूम, कभी रूहानी बना करते हैं
हमारी और तुम्हारी, ज़िंदगानी बयां करते हैं
हमारे गीतों में कोई, सजावट या बनावट नहीं
बस हकीकत से रु-ब-रू, कहानी बयां करते हैं

काश ! ज़िन्दगी किसी तालीम का हिस्सा होती
कम से कम इम्तिहान की तारीख तो पता होती



नामुमकिन है माँ-बाप का एक क़र्ज़ चुका पाना
कम से कम इसकी, एक किस्त तो अदा होती

१) शब्द यही सब...

जब साँसों की सुमधुर लहरें, पल भर को रुक जाती हों
जब मन की पीड़ायें तन की, नस-नस में घुल जाती हों
तब व्यथित हृदय की चीखों के स्वर शब्दों में ढल जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब गुलशन की आजादी, छिनती हो चार-दिवारी से
जब छिन जाती हों मुस्कानें, महज़ किसी लाचारी से
तब आँखों के अश्रु अनगिनत, शब्दों में घुल जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब युद्धों में बालक, वृद्धों के रक्तों की दरिया हो
जब नारी शोषण लोगों का, निर्मम निम्न नजरिया हो
तब मानवता के टुकड़े सौ, शब्दों में गल जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब मानव ही मानवता का, खुद दुश्मन बन जाता हो
हँसता-खिलता बचपन जब, एक लम्हे में छिन जाता हो
तब मंदिर - मस्जिद के पत्थर, शब्दों में चुन जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब कान्हा की बंशी से, कोई राधा आकर्षित हो
प्रेम अधूरा रह जाये, और आधा ही परिभाषित हो
तब झूठे और टूटे वादे, शब्दों में बस जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब एकलव्य गुरु द्रोणा के, बुत से शिक्षा लेते हों
जब राम स्वयं अपनी सीता से, अग्नि परीक्षा लेते हों
तब विश्वासों के उजड़े रँग, शब्दों में घुल जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब सुख के सहभागी सौ हों, उपहारों का विनिमय हो
मुश्किल लम्हों में जब झूठा अपनेपन का अभिनय हो
तब दोहरे व्यवहार सभी के, शब्दों में ढल जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब दंगों में हिन्दू-मुस्लिम, के घर-दर जल जाते हों
जब अदबों के शहर सितम के, रण-स्थल बन जाते हों
तब अल्लाह और राम हमारे, शब्दों में बस जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब इंसानों का परिचय !र केवल कुटिल समझ से हो
जब इंसानों का बँटवारा, जाति - धरम - मज़हब से हो
तब इंसानी हार के हिस्से, शब्दों में मिल जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब इंसानों की कीमत बस तत्कालिक पहचान से हो
नज़दीकी संभावित परिचय केवल सबके ध्यान में हो
तब जीवन के अर्थ हज़ारों, शब्दों में भर जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

जब गंगा की निर्मल धारा, अपशिष्टों से दूषित हो
जब लोगों की दैनिक भाषा, अपशब्दों से पोषित हो
तब सामाजिक ताने-बाने, शब्दों में सज जाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

पर्वत -पोखर -पेड़ -परिंदे, दरिया -माटी -अनल -पवन
धूप-छाँव संग रंग-ओ-खुशबू, चाँद ये तारे और गगन
ये कुदरत के किरदार अनोखे, शब्दों में बलखाते हैं
जाने फिर कब शब्द यही सब, गीत-गज़ल बन जाते हैं

२) बढ़ो बच्चियों



गुलशनों में गुलों सा महकती रहो
कोयलों की तरह तुम चहकती रहो
सीख कर कुदरती कोई कारीगरी
तितलियों से जरा ले के जादूगरी
झूठी रश्मों से आज़ाद होकर कहीं
इन परिंदों सा अम्बर में उड़ती रहो

तक रहीं मंज़िलें, कब से हैं रास्ता
हाँ मगर फ़ैसला सिर्फ़ हो आपका
तुममें सबमें भरा क्या हुनर ख़ूब है
रास्ता हर तुम्हारा ही महबूब है
अपनी मंज़िल की राहों पे रखके कदम
इक त्वरित गति से आगे ही बढ़ती रहो

क्या मोहब्बत कि दिल ना बगावत करे
रात - दिन खुद-ब-खुद जो शरारत करे
ऐसे आलम में खुद रखना अपनी ख़बर
याद रखना, कि भटके ना अपनी डगर
हर हकीक़त से रह के यहाँ रु-ब-रु
जा बुलंदी को छूकर चमकती रहो

ऐसी मुश्किल कहाँ, जिसका हो हल नहीं
ऐसा सोचो भी ना, कि हो काबिल नहीं
आत्म विश्वास से मन ये रखो मगन
बादलों से जरा ले के बंजारापन
इन हवाओं से करते हुए गुफ़्तगू
चाँद - तारे ये छूने को बढ़ती रहो



३) गणतंत्र

ये जो गणतन्त्र का मुख्य त्यौहार है, सच कहूँ, लम्बे संघर्ष का सार है
पुष्प उनको समर्पित, सलामी उन्हें, मरने-मिटने का भय था न आया जिन्हें
उन शहीदों के कदमों की रफ्तार है,
ये जो गणतन्त्र का मुख्य त्यौहार है

भ्रष्ट, बेईमानों और मुफ्तखोरों का ये, दुष्चिचारों, दलालों व चोरों का ये
झूठे, मक्कारों, गद्दारों, घपलों का ये, जंगों, दंगों-दरिन्दों के मसलों का ये
दरअसल, सर्वसम्मत बहिष्कार है,
ये जो गणतन्त्र का मुख्य त्यौहार है

राष्ट्रहित में हो हर एक अपना कदम, स्वार्थ से हो परे अपना हरएक करम
देश अपना है ये, इसके होकर जियें, खुद भी बेहतर बनें, और बेहतर करें
ऐसी सोचों व शपथों का विस्तार है,
ये जो गणतन्त्र का मुख्य त्यौहार है

हिन्दू मुस्लिम हों या सिख ईसाई यहाँ, रोज नफ़रत की पाटे जो खाई यहाँ
जो मोहब्बत का जन-जन में पैग़ाम दें, मुस्कुराती सुबह, खुशनुमां शाम दें
ऐसे लोगों को राष्ट्रीय नमस्कार है
ये जो गणतन्त्र का मुख्य त्यौहार है



४) बादल

हम कैसेन हुए अभागे, बिन बरसे बदरा भागे
धरती की तपती छाती से जिगरा हमरा काँपे
हम सब प्यासे के प्यासे
तेरा रस्ता रह-रह ताके

कजरा जैसा कारा बदरा, खेलै आँख मिचौली
रंगहीन बंजर का मंज़र, देखत करे ठिठोली
नाज़ुक तन में समेट सागर, इधर-उधर तू फिरता
हमरे घर-आँगन में कबहूँ, क्यूँ न तनिक तू रुकता
सुन ले हमरी गुहार ओ बदरा, भाग न आगे-आगे
हम सब प्यासे के प्यासे
तेरा रस्ता रह - रह ताके

बूँद-बूँद को तरसे तन-मन, अँखियाँ भई पथरीली
मेढक-मछली रो-रो मर गये, नदियाँ सब रेतीली
ताल-तलइया मुँह पिचकाये, कुआँ पड़ा शरमाये
बरखा के देउता का तुमका, लाज न अबहूँ आये
ची-ची, चूँ-चूँ कीट-पतंगन की, सुन ले तू आके
हम सब प्यासे के प्यासे
तेरा रस्ता रह - रह ताके

५) हम लोग

चलो आज, इस दौर को बेपर्दा करते हैं
इसके अजीब तौर पे कुछ चर्चा करते हैं
तरक्की इतनी हुई कि एक छोटे से मोबाइल में
बहुत कुछ कैद हो गया
रेडियो, टी० वी०, घड़ी, टेलीफोन, इंटरनेट,
अब सबकुछ एक हो गया
और जबसे इसमें कैमरा आकर तन गया
तबसे भीड़ का हर शख्स फोटोग्राफर बन गया
नतीज़तन, हादसा कितना भी गंभीर हो,
भीड़ फिर तमाशबीनों सा तसल्ली से फोटो खींचती है
अपनी बेशर्मियों और बेगैरतों से असभ्यता को सींचती है
किसी के दर्द की चीखें, भीड़ को अब विचलित नहीं करती
सँस्कारों की घोर कमी, कभी इंसानियत विकसित नहीं करती
पीड़ित की साँसे यूँ ही थम जाती हैं अफरा-तफरी में,
कंधे भी कम पड़ जाते हैं लगाने को, अब अरथी में
संवेदनायें शुष्क हो गईं, दिल सख्त हो गये
पढ़-लिख कर हम कितने कमबख्त हो गये
सम्पन्नता का मानक, मात्र आर्थिक लक्ष्य हो गये
कितने सभ्य थे हम, आज कितने असभ्य हो गये
आदमी प्रौद्योगिकी में इतना मशगूल हो गया
कि दूरस्थ लोगों के करीब, और करीब लोगों से दूर हो गया
हम इतने बेपरवाह और खुदगरज़ कैसे हो गये ?
कि रिश्तों की अहमियत से ज्यादा अज़ीज पैसे हो गये
हर सुबह क्यूँ मनहूस शाम सी लगती है
ये भीड़ तकनीक की गुलाम सी लगती है
कुछ पाकर हमने, बहुत कुछ खो दिया
मशीनें इकट्ठा कर, मानवता को खो दिया

६) मानवता शर्मिन्दा है

एक बेखौफ़ आदमी ने, एक इंसान जलाया जिन्दा है
इस हृदय विदारक घटना से, फिर मानवता शर्मिन्दा है

कैसा शासन और प्रशासन कि बिखर रहा अनुशासन है
बिखरे क़ानून-कायदों संग, बस नेताओं का भाषन है
क्यों सत्ताधीशों के आँगन से, कोई भी वक्तव्य नहीं है
क्या राष्ट्रसृजन की राजनीति ये इतनी भी सभ्य नहीं है
जुमलों की इस राजनीति को समझ रही सब जनता है
इस हृदय विदारक घटना से, फिर मानवता शर्मिन्दा है

असहाय व्यक्ति के वो अंतिम शब्द कि "बाबू मत मारो"
उस ध्वनि की स्वर पीड़ा से, अवरुद्ध हृदय हो जाता है
कुछ पल किंकर्तव्यविमूढ़ रहा, वह दृश्य देख तन-मन मेरा
उन चीखों से व्यथित धरा का शीश स्वयं झुक जाता है
हिंसक जीवन का रौद्र रूप भी देख धर्म क्यों अन्धा है
इस हृदय विदारक घटना से, फिर मानवता शर्मिन्दा है

घटना के चलचित्र से जब, अपराध स्वयं सत्यापित हो
तब त्वरित-न्यायिक निर्णय से, दृष्टान्त एक स्थापित हो
यह कृत्य मानवीय सभ्यता का निःसंदेह निम्नतम स्तर है
कैसे जीते पीड़ित परिजन ?, वो समझे बीती जिसपर है
उस पापी हृदयहीन अपराधी के, क्यों नहीं गले में फन्दा है
इस हृदय विदारक घटना से, फिर मानवता शर्मिन्दा है

७) कह दो कि ये सब झूठा है

एक बंजारे की हस्ती को, एक बंजारे की बच्ची को
कुछ पढ़े-लिखों ने लूटा है, कह दो कि ये सब झूठा है !

छल-बल के ऐसे रूप देख, संतों की ऐसी भूँख देख
अब रब भी हमसे रूठा है, कह दो कि ये सब झूठा है !

मंदिर में रब की मूरत थी, और वहीं तो बेटी बेबस थी
एक पत्थर दिल कब टूटा है, कह दो कि ये सब झूठा है !

कुछ लोग हैं डूबे मस्ती में
कुछ लोग हैं बैठे सुस्ती में
कुछ लोग हुस्न के दीवाने
कुछ लोग ज़िस्म के परवाने
कुछ लोग धरम के धन्धे में
कुछ लोग लिप्त हैं चंदे में
कुछ लोग भरम में रहते हैं
कुछ लोग शरम से मरते हैं
कुछ लोग रमें मयखाने में, कुछ लोग जुटे बहकाने में
कुछ लोग लगे धमकाने में, कुछ लोग लगे भड़काने में
कुछ लोग छुपे तहखाने में
कुछ लोग छवि चमकाने में
कुछ लोग नशेबाज़ी में हैं, कुछ लोग दगेबाज़ी में हैं
कुछ लोग चुहलबाज़ी में हैं, कुछ लोग बहसबाज़ी में हैं
कुछ लोग हैं जुमलेबाज बड़े
कुछ लोग हैं हमलेबाज बड़े

कुछ लोग हैं सत्ता के आदी, कुछ लोग व्यवस्था के बागी
कुछ ज़ोर-जुलूम के सहभागी, कुछ लोग समूचे अपराधी
कुछ लोग बड़े ही ख़तरनाक, कुछ कृत्य बड़े ही शर्मनाक
कुछ दृश्य बड़े ही ख़ौफ़नाक, कुछ जुल्म बड़े ही दर्दनाक

कुछ लोग बेग़ारी ढोते हैं
कुछ लोग शिकारी होते हैं
इंसान बड़ा मजबूर यहाँ
दिल्ली है अब भी दूर यहाँ
ये कोर्ट कचहरी हैं उनके
जेबों में पैसे हैं जिनके
वो सिंहासन पर अड़े पड़े
हम लोग वहीं के वहीं खड़े
एक वर्ग ज़श्न में डूबा है
गुस्सा गलियों में फूटा है
कह दो कि ये सब झूठा है !

कुछ मन के बड़े ही मैले हैं
कुछ सर्प समान विषैले हैं
कुछ आसमान में उड़ते हैं, हम तापमान में जलते हैं
वो इंतज़ाम कर चलते हैं, हम सड़क मार्ग पर मरते हैं

कुछ चूर हैं बादशाही में
मंसूबे तानाशाही के
कुछ लोगों के हैं सब जलवे
हम लोगों के हैं कुछ शिकवे
हर गाँव-गाँव हर शहर-शहर
देखा है कुछ दिन ठहर-ठहर
असमान स्वास्थ्य चिकित्सा है
शिक्षा की निम्न व्यवस्था है
कह दो कि ये सब झूठा है !

कुछ लोग हैं शोर-शराबे में
कुछ लोग हैं खून-खराबे में
कुछ लोग बड़ी बेवाक़ी में
कुछ लोग सने हैं माटी में, कुछ लोग मुक़दमें बाज़ी में
कुछ लोग हैं तिकड़मबाज़ी में, कुछ लोग महकती वादी में
कुछ हैं नफ़रत की आँधी में
कुछ लोग हैं दंगे बाज़ी में
कल ही तो घर एक फूँका है
कह दो कि ये सब झूठा है !

वो बिलियन ट्रिलियन ले भागे
यहाँ तनिक क़र्ज़ पे तन त्यागे
करते किसान कम मेहनत क्या
इनकी अब नहीं ज़रूरत क्या
कैसे सरकारी सिस्टम हैं
फ़सलों के दाम न्यूनतम हैं
सोता किसान ही भूँखा है
कह दो कि ये सब झूठा है !

कुछ लोग हैं हिस्सेदारी में, कुछ लोग लिप्त मक्कारों में
कुछ लोग मँझे ग़द्दारी में, कुछ लोग बड़े होशियारी में
कुछ लोग बड़े व्यापारी हैं, जो राजनीति पे भारी हैं
शोषण तो अब भी जारी है, सबकी ये ज़िम्मेदारी है
मसला है रोज़ी-रोटी का
मसला है अपनी बेटी का
मसला है अच्छी शिक्षा का
मसला है स्वास्थ्य चिकित्सा का
मसला है अपने खेतों का
मसला है अपने बेटों का

मसला है रिश्तखोरी का
मसला है मज़हबखोरी का
मसला है नौकरशाही का, मसला है लापरवाही का
मसला है बिकती स्याही का, ऊपर से तानाशाही का
मसला है पलती पीढ़ी का
है खेल साँप और सीढ़ी का
फिर कैसी ये खामोशी है
क्या अब भी कुछ बाक़ी है
क्या कोई नहीं समझता है ?
कह दो कि ये सब झूठा है !

कुछ कहते हैं भगवान यहाँ, कुछ कहते हैं भगवान वहाँ
मैं ढूँढ़ रहा, ईमान कहाँ ? , मैं ढूँढ़ रहा, इंसान कहाँ ?
कुछ ने सदियों से लूटा है
अपना मेहनत से रिश्ता है
हर एक कहानी क्रिस्से में
हम बँटे हुए हैं हिस्से में
हर तरह के फ़र्ज़ी काग़ज़ पर
लगता ही रहा अँगूठा है
कह दो कि ये सब झूठा है !

छल-कपट और चालाकी का
निष्ठुरता और नापाकी का
बर्बरता की हर लाठी का
लम्बी चौड़ी क्रद काठी का
कुछ लोगों की हमदर्दी का
बहुतों की दहशतगर्दी का
गवाह इतिहास समूचा है
कह दो कि ये सब झूठा है !

भू की छाती पर घाव दिए
जंगल के जंगल काट दिए
कुदरत को खूब चिढ़ा आये
कुछ बाँध बनाकर क्या पाए
जल मग्न धरा, कहीं बंजर है
नदियों का रूप समंदर है
कहीं बाढ़ बड़ी, कहीं सूखा है
कह दो कि ये सब झूठा है !

संसद में कितने हत्यारे, संसद में कितने गुंडे हैं
जो भरे चुनावी मौसम में अजमाते सब हथकंडे हैं
कुछ कुपड़ वहाँ पर बैठे हैं,
हम पढ़-लिखकर सब ऐसे हैं
सत्ता उनकी महबूबा है
हर बार हमीं को लूटा है
कह दो कि ये सब झूठा है !

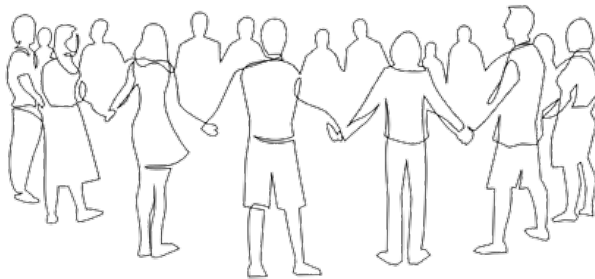
है हुयी तरक्की शर्तों पर
जी रहा आदमी क्रिस्तों पर
कुछ लोग बड़े ही कमतर हैं
क्यूँ नहीं एक से अवसर हैं
बँट गई ज़मीं, बँट गया फ़लक
हम जाति-धरम में रहे उलझ
मंदिर-मस्जिद में बँटा देश, झगड़ों-दंगों से बढ़ा द्वेष
ढोंगों के कितने छद्म भेष, है नैतिकता अब नहीं शेष
खो दिया बहुत, पाया कुछ है
सौ बातों का कड़वा सच है
कुछ बहुत ज़रूरी छूटा है
कह दो कि ये सब झूठा है !

८) कुछ दोस्त हमारे

कुछ दोस्त हमारे दुश्मन से, कुछ दुश्मन दोस्त सरीखे हैं
कितने ही होंगे छद्म रूप, हमने तो कुछ ही देखे हैं

अब लोगों के व्यवहारों में, कितना बाजार समा बैठा
भौतिकता के इस दौर में, अपनापन, संसार लुटा बैठा
निश्चित ही किसी दिन तुमको भी, ऐसा एहसास हुआ होगा
कि दिल तोड़ा होगा उसने ही, जिसपे विश्वास हुआ होगा
ऐसे इन मुश्किल लम्हों में, कितने ही मर-मर जीते हैं
जीने के होंगे ढंग बहुत, हमने तो कुछ ही सीखे हैं

हर बुरे वक़्त में अपनों का भी, देखा व्यवहार पराये सा
दुःख की घड़ियाँ गुजरें कैसे, फिर कौन भला समझायेगा
दोस्त नहीं मिलता कोई, जब खुशियों के दिन गुजर गये
मतलब के कारोबार तो देखो, कहाँ-कहाँ तक पसर गये
छल-कपट-लूट-मक्कारी के वैसे तो बहुत तरीक़े हैं
तुम सबने देखे होंगे बहुत, हमने तो कुछ ही देखे हैं



९) सब कुछ तो बिकता है

सुना है इस शहर में ज़िस्म बिकते हैं
जरूरत के हिसाब से हर क्रिस्म के मिलते हैं
काले-साँवले-गोरे-भूरे, नाटे-लम्बे, मर्द-बच्चे, औरत-बच्चियाँ
तरह-तरह के रँगों और साँचों की कद काठी वाली खूबियाँ
बस हर एक की कीमत अलग-अलग है

आपके पास गर पैसे हैं तो आपका सबकुछ है
ये अफसर, ये दफ़्तर, ये अदालत, ये इमारत
सबकुछ, जी हाँ, सच सुना, सबकुछ

सुना है इस शहर में शब्द भी बिकते हैं
कलम की रंगीन स्याही भी बिकती है
अच्छाई भी बिकती है, बुराई भी बिकती है
खुलेआम परियों की अँगड़ाई भी बिकती है

बस, जरूरतमंदों की जरूरत का फ़ायदा उठाया जाता है
और फिर हमें ही, क़ानून-क़ायदा बताया जाता है
बाज़ारों का चलन ही कुछ ऐसा है जो हमेशा से चले आये हैं
संभवतः मानव सभ्यता के पहले चरण से,
और अब तो इन बाज़ारों में सबकुछ मिलता है
ज्ञान, संस्कार, भक्ति, अभिनय, ईमान, मोहब्बत और जाने क्या-क्या

१०) प्यासी दरिया

जाने कितनी बस्तियों की, प्यास बुझाती थी दरिया
तरस रही है बूँद-बूँद को, आज बेचारी खुद दरिया

चिड़ियों के अलबेले सुर थे, लहरों की थी अपनी धुन
रेत चाटती कितनी गुमसुम, आज बेचारी खुद दरिया

कितने ही मछुआरों की थी, रोजी-रोटी का ज़रिया
भरी दुपहरी सुलग रही है, आज बेचारी खुद दरिया

कछुए-मछली जैसे जाने, कितनों का था घर अपना
और इन्हीं अपनों से बिछड़ी, आज बेचारी खुद दरिया

उजड़े हुए किनारे बेबस, ताक रहे एक दूजे को
कितनी है शर्मिदा खुद से, आज बेचारी खुद दरिया

जिस मानव-जीवन को सींचा, जीते-जी पूरे मन से
कितना आहत हुई उसी से, आज बेचारी खुद दरिया



११) बेटी

इस समूचे संसार का, ये अकेले बोझ ढोती है
ये, ये धरती माँ है, ये भी तो किसी की बेटी है
सच तो यह है, कि हम बोझ हैं एक बेटी पर
ना समझ लोग कहते हैं कि बेटी बोझ होती है

घर में अहसासों की एक मुकम्मल सोंच होती है
!र आँगन में बेटी की, चहल-पहल रोज होती है
बेइंतहा फ़िक्र है उसे भी, घर के दर-दीवारों की
बेटी, रोती हुई दीवारों के आँसू पोछ लेती है

ज़िन्दगी के एक मोड़ पर, बेटी घर छोड़ देती है
बेटी रोते हुये मुस्कुराने के बहाने खोज लेती है
वो भी जीना जानती है जिम्मेदारियों की ज़द में
फिर भी ज़माने की, कितनी रोक-टोक होती है

बेटी हर दौर की, रुख हवाओं का मोड़ सकती है
हजारों साल से जकड़ी हुई जंजीर तोड़ सकती है
कब तलक समझेंगे आखिर लोग इतनी बात को
कि दो-दो खानदानों का, बेटी एक जोड़ होती है



१२) मैं अपनी ध्वनि में पढ़ दूँगा

ना झरनों सी है गति मुझमें, ना पर्वत सी अकड़ मुझे
ना ही मुझको सुध-बुध अपनी, ना वृद्धों सी अकल मुझे
ना ही स्वप्न सजाया मैंने, ना ही दुःख का शोक मुझे
ना ही रूप सलोना सुन्दर, ना ही सुख का लोभ मुझे
ना तुम सा ही कंठ सुरीला, जो मैं एक दिन चहकूँगा
बस चंद संगठित शब्दों को मैं अपनी ध्वनि में पढ़ दूँगा

ना शेरों सा साहस मुझमें, ना चन्दा सी शीतलता
ना धरती सा धैर्य है मुझमें, ना सागर सी व्याकुलता
ना गीता का ज्ञान है मुझमें, ना ग्रन्थों की परख मुझे
ना ऋषियों सी लगन है मुझमें, ना संतों सी समझ मुझे
मैं तो एक बंजारा बादल, साथ हवा के चल दूँगा
बस चंद संगठित शब्दों को मैं अपनी ध्वनि में पढ़ दूँगा

ना ही जल सी मृदुता मुझमें, ना शैलों सी दृढ़ता है
ना मानव सी कटुता मुझमें, ना लोगों सी पशुता है
ना ही वेदों सी वाणी है, ना पेड़ों सा दानी हूँ
मैं पीड़ाओं में आँखों का, झरने सा झरता पानी हूँ
सागर से मिलने नदिया सा, बिना किसी पथ चल दूँगा
बस चंद संगठित शब्दों को मैं अपनी ध्वनि में पढ़ दूँगा



ना ही कर्म शिथिलता मुझमें, ना ही धर्म विषमता हूँ
ना ही पुंज-प्रखरता मुझमें, ना ही क्रमिक विफलता हूँ
ना मूरत सी स्थिरता हूँ, ना भक्ती का वक्ता हूँ
ना ही सूरज सा तप मुझमें, ना सृष्टी का दृष्टा हूँ
मैं तो पंच तत्व का पुतला, रूप बदल कर चल दूँगा
बस चंद संगठित शब्दों को मैं अपनी ध्वनि में पढ़ दूँगा

ना पंछी का कलरव मुझमें, ना पवनों की सनसन हूँ
ना सेनानी विप्लव मुझमें, ना ही बिखरा दरपन हूँ
ना ही अद्भुतता का परिचय, ना ही विस्मित संचय हूँ
संवेदित एक हृदय प्रफुल्लित धक्-रकरता गतिमय हूँ
मैं तो एक ज़ज्बात हृदय का, आँसू बन कर बह लूँगा
बस चंद संगठित शब्दों को मैं अपनी ध्वनि में पढ़ दूँगा

ना लहरों सी हलचल मुझमें, ना ही पावन परचम हूँ
ना ढोलक की ढम-ढम मुझमें, ना तानों की सरगम हूँ
ना तारों सी टिम-टिम मुझमें, ना बादल की रिमझिम हूँ
ना मंदिर का हिन्दू मुझमें, ना मस्जिद का मुस्लिम हूँ
दो पल का मैं अभिनय करके, साथ तुम्हारे हँस लूँगा
बस चंद संगठित शब्दों को मैं अपनी ध्वनि में पढ़ दूँगा



१३) नये खयालों को

नये खयालों को, खिलने दो - पलने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥

जब मंजिल है कोई, तो पथ होंगे अपने ।
जब है ज़िद और जुनूं, तो सच होंगे सपने ॥
घर - आँगन में खेलूँ, भौरों संग मैं घूमूँ ।
तितली का साथी बन, फूलों को मैं चूमूँ ।
इस धरती पर तो माँ, तू ही तो अपनी है ।
मैं हूँ एक पंछी सा, तू ही तो समझती है ॥
माँ खुले आसमाँ में, उड़ने दो - उड़ने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥

सूरज की ये किरणें, करती हैं जहां रौशन ।
बादलों की रिमझिम से, खिलते हैं वन - उपवन ॥
जब घूमें ये पवनें, झूमें मेरा तन - मन ।
चंदा की चांदनी में, रातें हँसती हर क्षण ॥

राहें जाने कितनी, नदियों की होती हैं ।
पर आखिर में जाकर, सागर में सोती हैं ॥
माँ मुझको नदियों सा, बहने दो - बहने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥

क्यों शान्त कभी इतना, रहता है समंदर यों ।
बच्चों सा कभी इतना, फिर है ये उछलता क्यों ॥
क्यों इस धरती को ये, बाहों में सिमेते है ।
ये हवा की चादर क्यों, धरती को लिपेटे है ॥
मैं हूँ छोटा पर माँ, मुझमें भी समंदर है ।
है नीर नहीं जिसमें, सपनों का सिकंदर है ॥
माँ मुझको समंदर सा, एक बार लहरने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥



हो कोमल हृदय हमारा, जिसमें विश्वास दया हो ।
हिम्मत असीम हो जिसमें, हरशय कुछ जोश नया हो ॥
काँटों के पथ पर भी तुम, चलना सिखलाओ माँ ।
आँखों से नीर बहे ना, हँसना सिखलाओ माँ ॥
मेरी माँ मुझ पर तुम, एक और दया कर दो ।
खुद सा बन पाऊँ मैं, मुझको ये वर दे दो ॥
माँ मुझको फूलों सा, दिन-रात महकने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥

हम क्यों इन चिड़ियों सा, उड़ सकते नहीं हैं ।
हम क्यों इन पवनों सा, बह सकते नहीं हैं ॥
चलती फिरती धरती, क्यों रुकती नहीं है ।
क्या इस धरती जैसी, बस्ती भी कहीं है ॥

गिरते बहते झरने, क्यों थकते नहीं हैं ।
तारे ये आसमाँ के, क्यों बुझते नहीं हैं ॥
माँ मुझको तारों सा, एक बार चमकने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥

कोई गाये पंछियों संग, कोई नाचे पेड़ों संग ।
कोई देख रहा सपना, कोई है सपनों संग ॥
कोई मन की तूलिका से, ख्वाबों में भरता रंग ।
कोई ख्वाबों को सच, करने की करता जंग ॥
मुझको तो बढ़ना है, इन मस्त हवाओं सा ।
जो हैं मुश्किल राहें, निश्चित होंगी आसां ॥
माँ मुझको भी सपने, बुनने दो -बुनने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥



मन है इतना चंचल, कि छू लूँ मैं आसमां को ।
जाऊँ ऊँचे जाकर, देखूँ मैं ज़हाँ को ॥
शामिल मैं हो जाऊँ, कुदरत के जहां में ।
जाऊँ मैं ना जाऊँ, नफ़रत के ज़हाँ में ॥
ऊँचे उड़ना सीखूँ, आगे बढ़ना सीखूँ ।
जाकर ऊँचे फिर मैं, नीचे गिरना सीखूँ ॥
माँ खुद मुझको गिरकर, उठने दो-उठने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥

नदियाँ ये बहती हैं, पर नीर नहीं पीतीं ।
क्यों सेवा में सबकी, हैं जीवन भर जीतीं ॥
क्यों नहीं पेड़ सब ये, फल अपने खाते हैं ।
हम सबको जाने क्यों, छाया पहुँचाते हैं ॥
बादल ये आसमाँ से, पानी बरसाते हैं ।
क्या इसके बदले ये, कुछ मुझसे पाते हैं ॥
माँ मुझको बादलों सा, एक बार बरसने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥

रब ने तो हम सबको, दी है एक सी पहचान ।
हिन्दू ना मुस्लिम ना, सब तो बस हैं इंसान ॥
है अली दीवाली में, रमज़ान में है जब राम ।
तो हम सब करते क्यों, धरती पर हिंसक काम ॥
हम सबकी माँ धरती, हम सब जिसके बेटे ।
क्यों नहीं साथ मिलकर, हम जीवन है जीते ॥
माँ मुझे भी वेद-कुरआन, पढ़ने दो - पढ़ने दो ।
बच्चों को बच्चों सा, बनने दो - बनने दो ॥



१४) सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय

व्यस्त बहुत हैं लोग स्वयं में और दिखावापन इतना
जन समूह में भी लगता है, आज अकेलापन कितना
देख के दुनिया की भौतिकता
होता है मुझको विस्मय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

व्याकुलता की पीड़ा असहज, जब तन-मन छू जाती है
जब गुल की रंगत खुद से, ही गुलशन में शरमाती है
तब विथा हृदय में कम्पित हो
कविता का करती अमर उदय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

छोटी सी एक पाली आशा, विकसित तन मन की अभिलाषा
शेष समय के रिक्त पलों में, स्वयं को जीना चाहूँ ज़रा सा
जीवन का उद्देश्य सार्थक
ढूँढ़ रहा हूँ रहकर गतिमय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

भुला दिया सुख-दुःख की बातें, बीती काली लम्बी रातें
भुला दिया हर शोषित क्षण जब, झरनें सी झरती थीं आँखें
याद रहा इतना हर पल कि
सबका आना जाना है तय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय



क्या मानव तेरे हृदय में होता, हितों परे अनुनाद नहीं
क्या देखा इतिहास नहीं, या फिर तुझको कुछ याद नहीं

धरा-नृत्य का रौद्र रूप वो
और प्रकृति का पवन प्रलय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

कितना खोया, कितना पाया, कोई गणित नहीं रखी
पास-पड़ोसी के वैभव से, ईर्ष्या तनिक नहीं रखी
दुनिया के रंग-ढंग से अब तक
किया न कोई अद्भुत संचय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

रंग-रूप और सोच के सिवा, तुझमें-मुझमें फ़र्क और क्या
आने-जाने वाला हर क्षण, परिवर्तन का मात्र कौर सा
मैं भी पञ्च-तत्व का पुतला
होना जिसका क्षण-क्षण क्षय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

सपनों के संसार में, मैंने भी, एक सपना देखा है
उम्मीदों की दिखती मुझको, एक चमकती रेखा है
अथक प्रयासों से सपनों पर
मिलती है साकार विजय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय



सत्य-अहिंसा के पथ का, अनुगामी बनकर चलना है
मानवता के रंग-ढंग में बस, बन कर राही रमना है
भाया मुझको स्त्री भर ना,
लोलुपता का क्षीण विषय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

कौन कहाँ किसका हो पाया, जुड़ी हर जगह काया-माया
नहीं मिली फिर अबतक कोई शीतल-शांत-सरोवर छाया
लोग यहाँ पर बदले अक्सर
बदला जब भी गतित समय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

नहीं चुकाये चुकता चाहें, कितना भी फिर खर्च करो
जीवन के क्षण-क्षण में चाहें, जितना चाहो अर्थ भरो
प्रेम रहा एक विषय शाश्वत
मन भर भरकर कर लो व्यय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

अलग-थलग हो, हे जन मानस, जाति-धर्म में उलझो ना
तू छोटा है, बहुत बड़ा मैं, ऐसा कुछ भी सोंचो ना
ईश्वर का वरदान है बुद्धि
कभी तो सोचो समझो कतिपय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय



गंगा जी की बहती निर्मल, धारा छूकर देखा है
तृष्णा-क्रोध सरीखे विष का, प्याला पीकर देखा है
जितना देखा जाना-समझा
उतना लिखा बिना कुछ संशय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

चिन्तन गहन, सहन-शक्ति हो, ईश्वर की हो भक्ति जहाँ
अतुलनीय जीवन की निश्चित, इच्छाओं की तृप्ति वहाँ
साथ न कुछ ले जाऊँगा मैं
कितना भी कुछ कर लूँ क्रय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

स्वयं नियंत्रित कर इच्छायें, मन का अनुसंधान करूँ
तप-त्याग-परिश्रम के बूते ही, जीवन का उत्थान करूँ
है सद्बुद्धि के संरक्षण में
सत्कर्मों का सम्पूर्ण निलय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय

बदल रही है दुनिया सारी, खुद को भी थोड़ा बदलो
चली आ रहीं रीति-रिवाजों का फिर से चोला बदलो
पुरुखों के आशीषों से हो
क्षण-क्षण सबका मंगलमय
सीख रहा हूँ दैनिक अभिनय
शून्य सरीखा मेरा परिचय



१५) मैं नीर हूँ

कभी बादल की बरसात का, कभी किसी नम आँख का
कभी सुबह की ओस का, तो कभी पपीहे की प्यास का

मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ
कभी झीलों में बँधकर, मन ही मन घबराता हूँ
कभी नदियों में बहकर, मिलन के गीत गाता हूँ
कभी कूपों की गहराइयों में, थम सा जाता हूँ
तो कभी बादलों से बिखर कर, मुस्कुराता हूँ
कभी प्यासे की एक बूँद हूँ
कभी बाढ़ का विकराल रूप हूँ
मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ

कभी सीप का तन छू उसे, मोती बनाता हूँ
कभी धरती के आँगन में मगन हो, चमचमाता हूँ
तो कभी नन्हें पौधों से लेकर विराट पेड़ों की नसों में
लहू बनकर मैं बहता हूँ, उन्हें जीना सिखाता हूँ
अब मुझे शुद्ध करो, मैं अशुद्ध हो चुका हूँ
अब मुझे राह दो, मैं अवरुद्ध हो चुका हूँ
मैं अपनी स्वच्छता और पवित्रता
को लेकर बहुत गंभीर हूँ
मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ



मैं हूँ, तो तेरा वर्तमान है, मैं हूँ, तो तेरा भविष्य है
मैं हूँ, तो तेरा अभिमान है, यही धरा का सत्य है
मैं स्वच्छ हो धरती के आँगन में, विचरना चाहता हूँ
मैं स्वस्थ प्रकृति को जन्म दे, सागर में सिमटना चाहता हूँ
मैं धरती की गौरव-गाथा हूँ, मैं जीवन की परिभाषा हूँ
मैं अपमानों को घोल बहुत, अब सम्मानों का प्यासा हूँ
मैं मोती, मैं रत्न, मैं ही हीर हूँ
मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ

कभी- कभी मैं व्याकुल हो, भड़भड़ा सा जाता हूँ
नदी नालों से निकल कर, जब घर में घुस जाता हूँ
खेतों में घुस बन दबंग, जब फसलों को खा जाता हूँ
समंदर से सुनामी सा फूटकर, जब बाहर आ जाता हूँ
तब तुम कहते हो, मैं पतित हूँ, मैं अधीर हूँ मैं पीर हूँ
मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ, मैं नीर हूँ



१६) तुम समझ जाओगे

मुस्कुराती हुई एक कली देखिये, मुड़के अपनी ये फिर, ज़िंदगी देखिये
गाँव से बनता कोई, शहर देखिये, और कुदरत का कोई, कहर देखिये
मुझको उम्मीद है, तुम समझ जाओगे,
बात दिल की अगर, कुछ भी सुन पाओगे

उजड़ा रंजिश से कोई भी घर देखिये, फिर मोहब्बत का कोई असर देखिये
ज़िंदगी का कोई हमसफ़र देखिये, मुश्किलों में बड़ों का हुनर देखिये
मुझको उम्मीद है, तुम समझ जाओगे
बात दिल की अगर, कुछ भी सुन पाओगे

गंगा यमुना की बहती लहर देखिये, कारखानों का घुलता ज़हर देखिये
गौर से आज, इतिहास फिर देखिये, सरहदों पर शहीदों के सिर देखिये
मुझको उम्मीद है, तुम समझ जाओगे
बात दिल की अगर, कुछ भी सुन पाओगे

उगते सूरज की तुम, रौशनी देखिये, माँ की ममता भरी, ओढ़नी ओढ़ीये
अपने घर गाँव की, हर गली देखिये, धूप और छाँव की, दिल्लगी देखिये
मुझको उम्मीद है, तुम समझ जाओगे
बात दिल की अगर, कुछ भी सुन पाओगे

मुफलिसों के घरों का हसर देखिये, रिश्तों की दरों का असर देखिये
बदले मौसम की हर एक वज़ह देखिये, उसको हर कोण से, हर तरह देखिये
मुझको उम्मीद है, तुम समझ जाओगे
बात दिल की अगर, तुम भी सुन पाओगे

युद्ध से क्या हुआ, खुद भला देखिये, आसुओं के सिवा क्या मिला देखिये
हसरतों के मुकम्मल महल देखिये, फिर किसानों के मज़बूर हल देखिये
मुझको उम्मीद है, तुम समझ जाओगे
बात दिल की अगर, कुछ भी सुन पाओगे

रंग फूलों का, खिलता अगर देखिये, आशिकी तितलियों की मगर देखिये
जाति-मज़हब का कोई, वजू देखिये, मिलता-जुलता सभी का, लहू देखिये
मुझको उम्मीद है, तुम समझ जाओगे
बात दिल की अगर, कुछ भी सुन पाओगे

घर से होती विदा बेटियाँ देखिये, या छनकती हुई, चूड़ियाँ देखिये
ये मोहब्बत, ये उनकी वफ़ा देखिये, त्याग, उनके कई, हर दफ़ा देखिये
मुझको उम्मीद है, तुम समझ जाओगे
बात दिल की अगर, कुछ भी सुन पाओगे

उनके ख़्वाबों का जलता ज़हां देखिये, चंद सिक्कों का भूँखा, ज़हां देखिये
उनकी चुप्पी करें कुछ बयाँ देखिये, उठती-जलती कहीं, अर्थियाँ देखिये
मुझको उम्मीद है, तुम समझ जाओगे
बात दिल की अगर, कुछ भी सुन पाओगे

होती अनहोनियाँ अब सरे आम क्यूँ, खून की होलियाँ, हो रही आज क्यूँ
ज़िंदगी आज इतनी है, खामोश क्यूँ, खो रहे लोग हैं, आज भी होश क्यूँ
सारी बातों पे फिर से, मनन कीजिये
बात दिल की मगर, थोड़ी सुन लीजिये

१७) आँसू

मैं आँसू, सबके ही सुख और दुःख में साथ निभाता हूँ
सच्चे अहसासों की तह से, आँखों से बहता जाता हूँ
मात्र नहीं जल - कण का संचय, मैं भावों का संगम हूँ
जीवन के हर पहलू का, निश्चित ही सहज विहंगम हूँ
शब्द सभी जब चुक जाते हैं
स्वर कम्पन जब रुक जाते हैं
भावों की भंवरो में फँसकर
जब होंठों के पट बंध जाते हैं
तब विथा हृदय की तुम सबसे
आकर बस कहता जाता हूँ
सच्चे अहसासों की तह से, आँखों से बहता जाता हूँ
मैं आँसू, सबके ही सुख और दुःख में साथ निभाता हूँ

१८) सब कुछ बदल जाता है

वक्त के साथ तो, सब कुछ बदल जाता है
सुबह से शाम तक तो, सूरज ढल जाता है
वो कह रहा था कि मैं, अपनी बात से मुकरता नहीं
मगर देखा है कि उसका भी, अंदाज़ बदल जाता है

ये गुलशन की खुशबू, ये महफ़िल का रंग
ये बचपन की मस्ती, और जीने का ढंग
मानों बीता हुआ कोई कल हो जाता है
वक्त के साथ तो, सब कुछ बदल जाता है

ये दरिया की लहरें, ये कश्ती का दमखम
हवाओं की हस्ती और साहिल का हमदम
इन सभी का एक क्षण में, रुख बदल जाता है
वक्त के साथ तो, सब कुछ बदल जाता है

कहीं नफ़रतों की आतिश, तो कहीं मोहब्बतों की बारिस
कुछ इस तरह से उम्र का, हर लम्हा निकल जाता है
कभी देखता है इंसान, सरे आम तमाशा
तो कभी इंसान खुद तमाशा बन जाता है

कोई निःशब्द, तो कोई स्तब्ध रह जाता है
कोई, कहानी का अनकहा इक शब्द रह जाता है
कोई, सूरज या चाँद सा, बादलों में छुप जाता है
कोई पंछियों के कलरव से, यकायक रुक जाता है
ये धरती, ये अम्बर और ये कुदरत का करिश्मा
सभी में हर लम्हा, कुछ तो दखल आता है
वक्त के साथ तो, सब कुछ बदल जाता है

ये होंठों की मुस्कराहट, ये हृदय की घबराहट
वेदना की चीख, बुजुर्गों की सीख, सभी सगे अज़ीज
काल का विकराल रूप, सब कुछ निगल जाता है
वक्त के साथ तो, सब कुछ बदल जाता है



१९) दर्द जब हृद से गुजरता है...

दर्द जब हृद से गुजर जाता है, तो रोने लगता हूँ
मानों कि खुद से ही, फिर दूर होने लगता हूँ
लोग हँसते हैं, मेरी आँखों में अश्रुओं को देखकर
नकली ही सही, फिर एक मुस्कान ढोने लगता हूँ

बड़ी बेवाकी से लोग कहते हैं कि बड़ा ज़ज्बाती हूँ
कोई कहता कि मैं पुराना खयाली और देहाती हूँ
यूँ “रात गयी बात गयी” का मिसरा याद करके
फिर एक अनजाने से ख़्वाब में खोने लगता हूँ

लोग कहते कि जीने के लिए चालाकी भी ज़रूरी है
मुझे तो पता भी नहीं कि ये किस खेत की मूली है
कई बार खाया हूँ धोखा, यूँ सरे आम लुट कर जब
तो कभी दुनिया पे, कभी खुद पे हैरान होने लगता हूँ

जब कोई अपना कहता है, कि तुम मेरे लायक नहीं
कभी कभी सोचता हूँ कि इतना भी नालायक नहीं
समंदर में एक कश्ती सा, सफ़र को निकला हूँ, मैं
जूझता हूँ सिरफ़िरी लहरों से, कभी डूबने लगता हूँ

कभी कुछ खोने का गम, कभी कुछ पाने की ललक
कभी खुद से ज़िद, तो कभी जीने की ज़दोज़हद
अपने दिल से साँसों की सिफ़ारिश करते करते
इस तरह से खुद के कुछ अहसान ढोने लगता हूँ

अरसा गुज़र गया, कभी पास, कभी दूर रहकर
थक हार सा गया अब, मोहब्बत के सुबूत देकर
अब भी वो कहता है कि, मैं कैसे यकीं करूँ
कभी कभी सुनकर ये, परेशान होने लगता हूँ

कभी हल्की फुल्की शरारतों से, मुझे वो हँसाता है
कभी बहकी बहकी बातों से, मुझे वो सताता है
बेहद पसंद है मुझे वो, जैसा भी है, उसके बग़ैर
भरी महफ़िल में आज भी, अकेला होने लगता हूँ

यूँ मोहब्बत को मुक़म्मल, बनाने की ख्वाइसों में
ज़माने की तरह तरह की, तमाम आज़माइशों में
बिखर कर संभलने की, कोशिशों में बीते पल
याद करता हूँ तो, खुद का मेहमान होने लगता हूँ

कभी एक बेज़ुबान की तरह, यूँ खामोश रहता हूँ
कभी कभी बीती बातों के, आगोस में रहता हूँ
यूँ तो बुनियादी ख़ामियाँ हैं सभी में, ये सोचते हुए
नींद में जगता हूँ तो कभी जागते हुए सोने लगता हूँ
दर्द जब हद से गुजर जाता है, तो रोने लगता हूँ

२०) बड़े गौर से देखा है

ज़हां की हर तहज़ीब को, बड़े गौर से देखा है
बड़े करीब से, ज़िन्दगी और मौत को देखा है
देखा है हमने, बदलते हुए इंसानों को
इश्क़ में डूबे, तड़पते हुए इंसानों को
कभी-कभी मोहब्बत, ज़रूरत सी लगती है
कभी-कभी ज़रूरत, मोहब्बत सी लगती है
लोगों में नफ़रतों के, हर खौफ़ को देखा है
करीब से, ज़िन्दगी और मौत को देखा है

हम भला करते हैं किसी का, तो हम भले हो जाते हैं
ज़रा भी गलती हो जाये, तो हम बुरे हो जाते हैं
इसी सिलसिले में कभी-कभी अपने पराये हो जाते हैं
और कभी - कभी पराये लोग भी अपने हो जाते हैं
इंसानों की इंसानों पर, हर रौब को देखा है
करीब से, ज़िन्दगी और मौत को देखा है

आधुनिक परिवेश और पुरानी मान्यताओं को देखा है
ज़िन्दगी के हर मोड़ पर तमाम विषमताओं को देखा है
इसी धरती की प्रतिभाओं को, सितारों पर देखा है
ज़िद और जुनून की, असीम क्षमताओं को देखा है
गुज़रते हुए वक़्त के, हर दौर को देखा है
करीब से, ज़िन्दगी और मौत को देखा है

२१) एक राह सुनिश्चित कर लेना

जीवन यह कैसे जीना है ?, एक राह सुनिश्चित कर लेना
यदि भूल कोई हो जाये तो, मन से प्रायश्चित कर लेना
नदिया सी राह बनाकर फिर पर्वत सा तनिक न डिंगना तुम
हर एक चुनौती से टकरा, खुद को सत्यापित कर देना

जीवन शैली को सरल बना, खुद को अनुशासित कर लेना
जीवन है अनमोल, इसे समुचित परिभाषित कर लेना
सच तीखा है, हाँ, झूठ मधुर, दुनिया की कटु सच्चाई है
पर मानवता का मंत्र आचरण में अनुनादित कर लेना

शान्ति, सरलता, साहस से तन-मन आच्छादित कर लेना
अनवरत प्रयासों से अद्भुत, एक क्षण स्थापित कर देना
उज्ज्वल जीवन के रंगों में, सद्बुद्धि-हृदय के कम्पन भर
हर अँधियारा हर लेना तुम, जन-जन उत्साहित कर देना

नव मार्ग सृजित कर जीवन के, सच को सम्पादित कर देना
हर जटिल समस्या, कठिन तपस्या से संभावित कर देना
विघ्न भयंकर हो कितना, फिर क्यों ना हो सागर जितना
पर सूझ और सद्बुद्धि से, यह युग ऐतिहासिक कर देना

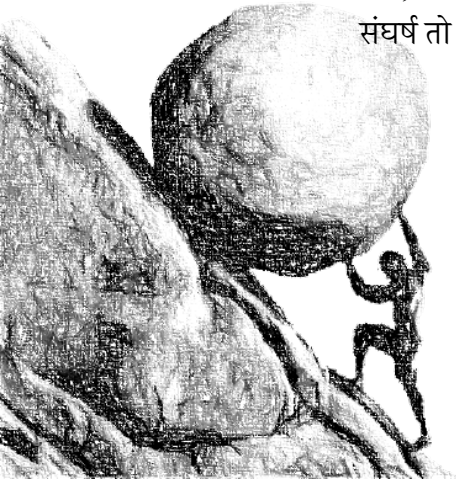
प्रेम-पवित्र, हृदय की ध्वनि, इसको उत्प्लावित कर देना
कहने के सभ्य समाजों में संदेश प्रवाहित कर देना
बदलाव बड़ा आवश्यक है दुनिया के रीति रिवाजों में
कुछ तौर-तरीकों को तुम भी, हृद तक प्रभावित कर देना

२२) संघर्ष

कोई खोकर पाता है, कोई पा कर खोता है
आदतन इंसान पाकर हँसता है खोकर रोता है
अबतलक पढ़ा वही जो किताबों में लिखा है
पर पन्नों से परे भी, बहुत कुछ होता है
सम्पूर्ण सृष्टी हर पल, देती कुछ शिक्षा है
संघर्ष तो ज़िन्दगी का, एक अहम हिस्सा है

कभी रुला कर जाती है, कभी हँसा कर जाती है
पर हर एक घटना बहुत कुछ सिखा कर जाती है
समझते - सीखते रहना, विकास की परिपाटी है
तभी तो घटना विशेष, एक रिवाज बन जाती है
विषम परिस्थितियों से जूझना, असल परीक्षा है
संघर्ष तो ज़िन्दगी का, एक अहम हिस्सा है

खुद मंजिलें अपनी चुनों, खुद रास्ते अपने बुनों
नेतृत्व अपने हौसलों का, तुम स्वयं करते चलो
मुश्किलें आयेगी बेशक, सामना डट कर करो
शुरुआत अपने रास्तों की कुछ ज़रा हटकर करो
उठो, आगे बढ़ो, तुम्हें किसकी प्रतीक्षा है
संघर्ष तो ज़िन्दगी का, एक अहम हिस्सा है



सिखाती रहती है दरिया, मंजिल की ओर बढ़ना
पर्वत हरपल सिखाता, इरादों पर अटल रहना
चाँद-तारे हैं सिखाते, रौशन करना ज़हाँ
इससे बड़ी पाठशाला, और धरती पर कहाँ
सिखाने की ये, प्राकृतिक अनूठी व्यवस्था है
संघर्ष तो ज़िन्दगी का, एक अहम हिस्सा है

गर आप अपने साथ हैं, तो असंभव कुछ भी नहीं
वक़्त के साथ चलना, नियत है कुछ भी नहीं
हर साँस का तो मूल्य, सदैव अर्थ से परे रहा
हर व्यक्ति दुर्गम मार्ग पर, सदैव अकेले रहा
ज़िन्दगी और ज़माने का अजीब सा रिश्ता है
संघर्ष तो ज़िन्दगी का, एक अहम हिस्सा है

मजबूत इरादों से तो हर मुक़ाम पाना है मुमकिन
पर ज़रूरी है हौसलों के संग उड़ान भरना हरदिन
सच है कि कुछ पाने के लिए, खोना तो पड़ता है
गिर कर हजार बार भी, खुद उठना तो पड़ता है
वो हर इरादा टूट जाता है, जो भी कच्चा है
संघर्ष तो ज़िन्दगी का, एक अहम हिस्सा है



२३) अर्थ भला क्या चाहूँगा

गुमनाम अँधेरो में रह कर, मैं खुद से बातें करता हूँ
हाँ कभी-कभी हँस देता हूँ, तो कभी-कभी रो लेता हूँ
भरी-भरी आँखें ये अपनी, महफिल में ले जाऊँ क्यूँ
फिर मैं अपने गीतों पर, लोगों से कुछ भी चाहूँ क्यूँ
जीवन का उद्देश्य सिर्फ़ क्या, सिद्धि-प्रसिद्धि पाना है
क्या मुझको यह ज्ञात नहीं, जो आना है वो जाना है
बस इतना सा इल्म रहा, कुछ साथ नहीं ले जाऊँगा
अर्थहीन कविताओं का फिर, अर्थ भला क्या चाहूँगा

मैं अशकों की स्याही में, चाहत का कलम डुबोता हूँ
फिर जीवन की सच्चाई को, शब्दों में खूब पिरोता हूँ
कोई समझे या ना समझे, मेरा भी कुछ अनुभव है
पास जुनुं! गर बाक़ी है तो, कुछ भी नहीं असंभव है
जीता हुआ एकाकी जीवन, लिखने बैठा गज़ल यहाँ
वक्रत अस्थिर सब कुछ पल भर में देता है बदल यहाँ
जलता रहा दिये के जैसा, एक दिन फिर बुझ जाऊँगा
शब्द तुम्हीं कुछ बतलाओ कि कितना मैं लिख पाऊँगा

स्वर्ग तुम्हारा नर्क तुम्हारा, जीवन का सब वक्रत तुम्हारा
कविताओं में अर्थ भरूँ क्या, हर अक्षर, हर शब्द तुम्हारा
मेरे तन का कण-कण तेरा, मेरा अपना परिचय क्या ?
मैं तो मात्र खिलौना तेरा, मेरा अपना अभिनय क्या ?
मुश्किल से मुश्किल लम्हों में, डिगा कभी विश्वास नहीं
जो भी पाया, बाँट दिया बस, रखा कुछ भी पास नहीं
जाते-जाते, इस दुनिया को, कितना क्या दे पाऊँगा
अर्थहीन कविताओं का फिर, अर्थ भला क्या चाहूँगा

नहीं रहा उद्देश्य कभी, धन संचय कर अभिमान करूँ
कोशिश इतनी रही कि मैं भी गीतों में लय तान भरूँ
कल ही मैंने शब्द जोड़कर, पंक्ति को लयबद्ध किया
अपनी भाव-भंगिमा को बस दिल से मैंने व्यक्त किया
हाँ, मैंने भी गीत कई फिर, अपनों के सम्मुख गाये
किंचित, मेरे अपने भी मुझको कुछ समझ नहीं पाये
स्वयं रहा अज्ञानी जब मैं, तुमको क्या समझाऊँगा
अर्थहीन कविताओं का फिर, अर्थ भला क्या चाहूँगा

चंद पलों के जीवन को फिर, व्यर्थ न होने देना तुम
साथ रहो मिलजुल कर सारे, अम्बर को छू लेना तुम
खाली हाँथ थे आये प्यारे, खाली हाँथ ही जाओगे
जियो फकीरों जैसा हरपल, वरना फिर पछताओगे
रंग महल में बैठ के रंगों से आकर्षित मत होना
अर्थ के लोलुपपन के मद में, तुम परिभाषित मत होना
सीधे - सच्चे जीवन का मैं, सबको सच बतलाऊँगा
शब्द तुम्हीं कुछ बतलाओ कि कितना मैं लिख पाऊँगा

जिया हमेशा हरपल वैसा, जैसा सबको दिखता हूँ
लाख, बुराई ताकतवर हो, कभी नहीं मैं डरता हूँ
कोशिश है हर मुश्किल हर लूँ, अपने ज़िद्द जुनूँ से
और नया इतिहास लिखूँ मैं, अपने लाल लहू से
मैं बंजारा, चाहूँ इतना, कि जन-जन की होंठों पे
बस जाये मुस्कान मुकम्मल सभी मुक्त हों शोकों से
पीकर ज़हर ज़माने का, बन अमृत बहता जाऊँगा
अर्थहीन कविताओं का फिर, अर्थ भला क्या चाहूँगा

कविता, रही इबादत दिल की, कविता मेरी ताक़त है
कभी शरारत सावन की ये, रही दिलाती राहत है
महफ़िल की कभी धूम रही, कभी दुनिया से ये दूर रही
कभी लोगों के सिर चढ़ बोली, कहीं लोगों से मजबूर रही
शब्दों का श्रृंगार करे और अर्थों में ज़ज्बात भरे
आहिस्ता - आहिस्ता कविता, दीवानों की बात करे
कविता तुझसे कलम मैं अपनी अलग नहीं रख पाऊँगा
शब्द तुम्हीं कुछ बतलाओ कि कितना मैं लिख पाऊँगा

अच्छा होता मैं भी दुनिया के रँग - ढंग में रम जाता
बात-बात पर अपने हित के खातिर सबसे लड़ जाता
किन्तु हृदय के कम्पन मेरे, साथ नहीं देते बिल्कुल
बात बुजुर्गों की मुझको कर देती है अक्सर व्याकुल
चंद पलों में कुछ पल आखिर सबका होकर जी लूँ मैं
खुशियाँ देता रहूँ अकल्पित, दुःख के आँसू पी लूँ मैं
तुमको अपने जीवन की मैं, व्यथा नहीं बतलाऊँगा
अर्थहीन कविताओं का फिर, अर्थ भला क्या चाहूँगा

या रब, इतनी रहमत करना, मैं भी फ़र्ज निभा पाऊँ
जीवन के अनमोल क्षणों का, कुछ तो कर्ज़ चुका पाऊँ
मैं और तुम, बन जायें हम और जीवन का श्रृंगार बने
जाति - धरम से परे कोई फिर, एक सच्चा संसार बने
मुश्किल राह सरल कर पाऊँ, बस इतना सा है निश्चय
रहा नहीं फिर मुझको आखिर, हार-जीत का कोई भय
आना - जाना जग ज़ाहिर है, रब जाने, कब जाऊँगा
शब्द तुम्हीं कुछ बतलाओ कि कितना मैं लिख पाऊँगा

सूरज-चाँद-सितारों जितनी, रही नहीं औकात कभी
आज अगर है मेरे घर दिन, होगी निश्चित रात कभी
धरती पर विचरण करता एक, जीव, सृष्टि का मैं ठहरा
जिसके पग-पग पर है हरपल, परम दृष्टि का चिर पहरा
कभी-कभी जन जीवन के, जंजालों से इतना ऊँचा
उद्वेलित हो तन-मन मेरा, घोर निराशा में डूबा
स्वयं प्रशस्तित पथ पर चलता, दूर कहाँ तक जाऊँगा
शब्द तुम्हीं कुछ बतलाओ कि कितना मैं लिख पाऊँगा

भीतर - भीतर रो - रो कर मैं, बाहर - बाहर हँसता हूँ
विषम व्यवस्थाओं की आखिर, कैसी एक विवशता हूँ
पल-पल की पीड़ा मेरी क्या, कोई तनिक समझता है
काश ! कोई परवाह ये करता, कैसी मेरी अवस्था है
बरस रहा है घर-घर सावन, मेरा आँगन ही तरसा
ना जाने क्यों साथ हमारे, होता है अक्सर ऐसा
गाते - गाते गीत तुम्हारे, स्वयं बरसता जाऊँगा
अर्थहीन कविताओं का फिर, अर्थ भला क्या चाहूँगा

जाति-धर्म के कोरेपन में, बँध कर रह जाता क्षन-क्षण
गर प्रकृति तुम्हारी गोद से पहले, तोड़ नहीं आता बंधन
मैं नहीं चाहता किंचित यह कि जीवन भर स्वच्छन्द रहूँ
पर तीव्र हुई उत्कंठा मन में गीत-गज़ल कुछ छन्द कहूँ
कुदरत की हर एक कला से, मैं कितना अनजान रहा
चंद किताबों के पन्नों तक, मेरा सीमित ज्ञान रहा
तू अनन्त सम, मैं क्षण भंगुर, तुझ पर ही मिट जाऊँगा
शब्द तुम्हीं कुछ बतलाओ कि कितना मैं लिख पाऊँगा

सरिता की धारा सा बहकर, सागर से मिल आना है
छूकर धूप, बदल बूंदों में, बादल में मिल जाना है
बादल की करुँ सवारी मैं, धरती का आँगन मैं घूमूँ
बूँद-बूँद बन प्यास बुझाऊँ, कन-कन को जो मैं चूमूँ
जीव-जन्तुओं की नस-नस में बहकर दूर थकान करुँ
रक्त बन्नों मैं पौधों का, और चेहरों की मुस्कान बन्नों
आखिर फिर सरिता की धारा, में मिलता मैं जाऊँगा
अर्थहीन कविताओं का फिर, अर्थ भला क्या चाहूँगा

भाषा-बोली-रीति-रिवाजों, से मुँह मोड़ नहीं सकते
सदियों की पूँजी है ये, जिसको तुम छोड़ नहीं सकते
ज़र-ज़मीन-जायदाद पे तेरा ही पहला अधिकार रहा
क्यूँ स्वाभिमान की साक्षरता को अपनाता ही भार रहा
क्या याद नहीं कुछ, पुरखों के संघर्षों की वो गाथा है
जिसके चलते ज़िन्दा अबतक, अपनी भारत माता है
जब भी भूलोगे उन सबको, याद दिलाता जाऊँगा
अर्थहीन कविताओं का मैं, अर्थ भला क्या चाहूँगा

भूल न जाना कभी कि तुम, कर्तव्यों का संवाहन हो
तुम ही अपनी असफलता के मुख्य रूप से कारन हो
आखिर क्यूँ अपनी पीड़ा को, स्वयं निमंत्रित करते हो
बिखरी जीवन शैली को क्यूँ नहीं नियन्त्रित करते हो
देख रहा हूँ बैठा - बैठा, आना - जाना लोगों का
परख रहा हूँ पागलपन और ताना - बाना लोगों का
मैं तो एक मुसाफ़िर ठहरा, हँसता गाता जाऊँगा
अर्थहीन कविताओं का मैं, अर्थ भला क्या चाहूँगा

२४) कविता मेरी अधूरी है

अन्तर्मन से जन्मीं हर एक, कविता मेरी अधूरी है
शब्द तुम्हीं कुछ बतलाओ कि क्या ऐसी मजबूरी है

नफ़रत लोगों के सीनें में, तब से अब तक पसरी है
मंदिर-मस्जिद की ज़द वाली दुनिया कितनी बहरी है
क्यूँ इतने निष्प्राण रहे सब, क्यूँ इतने अनजान रहे
जब कि सबके आस-पास में, राम, कहीं रहमान रहे
जाति-धरम-मज़हब की जब तक मानवता से दूरी है
अन्तर्मन से जन्मीं हर एक, कविता मेरी अधूरी है

बादल-दरिया ने कब पूँछा, पानी देकर जाति तेरी
कब तरुवर ने पूँछा आखिर, फल के बदले जाति तेरी
फिर क्यूँ कसदन मानव तू ही, जाति-धर्म का दास बना
क्या बदला दुनिया में आखिर बस खूनी इतिहास बना
जब तक सूरज चाँद को लेना, अनुमति तेरी ज़रूरी है
अन्तर्मन से जन्मीं हर एक, कविता मेरी अधूरी है

ऊबड़-खाबड़ समतल कर, भू खण्डों को जोड़ा है
कड़ी धूप और ठंडक में भी, हमने पत्थर तोड़ा है
नेताओं ने हम सबको बस वोट समझ कर रखा है
सरकारी प्रपंचों ने खिलवाड़ समझ कर रखा है
जब तक सरकारी तंत्रों में, होती हँसी ठिठोली है
अन्तर्मन से जन्मीं हर एक, कविता मेरी अधूरी है

विकसित सी एक पीढ़ी अपनी हमसे ही मुँह मोड़ रही
जिया अभावों में जीवन, हर साँस घटाना-जोड़ रही
कैसा राज-काज है भइया, नेता-गण फल-फूल रहे
अन्न विधाता कृषक जहाँ, फाँसी का फंदा झूल रहे
धरती पुत्र किसानों को, जब तक सरकार ये भूली है
अन्तर्मन से जन्मीं हर एक, कविता मेरी अधूरी है

बेईमानों की पहल हर जगह, अब तक रही पहेली है
दर से लेकर दफ्तर तक जब, रिश्तित रही सहेली है
खुदगर्जों को फुरसत कब है, अपने हित के धंधों से
भ्रष्ट तन्त्र की शाखायें कब ?, जुड़ीं ज़रूरतमंदों से
शासन और प्रशासन में, जब तक हाँ-हुजूरी है
अन्तर्मन से जन्मीं हर एक, कविता मेरी अधूरी है

२५) साथ

गर जान मेरी जाने से पहले, मुझको जान लिया होता
तो पास तुम्हारे यहीं कहीं, मुझ सा इंसान जिया होता
कतरा-कतरा जीना-मरना, बिखरा-बिखरा बचपन था
मुश्किल हालातों में हर पल, तन्हा-तन्हा तन-मन था
फटकार नहीं दुखदायी थी, हाँ प्यार मगर देते थोड़ा
था दर्द भरा जो सीने में, तुम बाँट अगर लेते थोड़ा
गर मेरी तन्हाई पर तुमने, थोड़ा सा ध्यान दिया होता
तो पास तुम्हारे यहीं कहीं, मुझ सा इंसान जिया होता

मेरी पीड़ाओं पर हँसने वालों में शामिल तुम भी थे
मेरी खुशियों पर जलने वालों के माफिक तो तुम भी थे
जब हूँ बिल्कुल खामोश, तो अब क्यों हाहाकार मचाते हो
क्यों बाद मेरे, इस दुनिया को दोहरा व्यवहार दिखाते हो
दो पल साथ बिताकर मुझपे कुछ अहसान किया होता
तो पास तुम्हारे यहीं कहीं, मुझ सा इंसान जिया होता

तुमने तो शर्तों-समझौतों पर ये जीवन कुरबान किया
जान बूझकर जाने क्यों सच से खुद को अनजान किया
यूँ तो आशिक्र था कुदरत का, मैं शामिल था बंजारों में
तुमने ही मुझको बाँध दिया, बेमतलब के जंजालों में
रिश्तों की मुश्किल रश्मों को, कुछ आसान किया होता
तो पास तुम्हारे यहीं कहीं, मुझ सा इंसान जिया होता

२६) अमर कथा सा ज़िन्दा हूँ

हर मुश्किल से टकराकर, एक अमर कथा सा ज़िन्दा हूँ
तुम जिस धरती के मानव हो, उस का ही वाशिन्दा हूँ

हाँ हमने कुछ स्वप्न सजाये, कुदरत के आलिंगन में
बीज हुए हैं सभी प्रस्फुटित, जो थे बोये बचपन में
रँगों और खुशबू की दुनिया, तेरा है व्यापार रहा
मेरा तो प्राकृतिक जीवन से ही अद्भुत प्यार रहा
मैं अम्बर में उड़ता - फिरता, एक आजाद परिंदा हूँ
तुम जिस धरती के मानव हो, उस का ही वाशिन्दा हूँ

चाँद-सितारों से अब भी मैं, झाँक रहा हूँ धरती पर
बाँट रहा हूँ सुख-दुःख सारे, दूर रहा हूँ रस्ती भर
तुम दास बने कल-पुर्जों के, हम साथ रहे बुजुर्गों के
तुम मंगल पर मंगल ढूँढ़ो, हम अलग नहीं हैं स्वर्गों से
तुम पश्चिम की सुबह सुहानी, मैं पूरब की संध्या हूँ
तुम जिस धरती के मानव हो, उस का ही वाशिन्दा हूँ

२७) मैं एक कवि हूँ

मैं एक कवि हूँ, अहसासों से भरा हुआ एक व्यक्ति हूँ
मैं तुम सबकी पीड़ा की एक नहीं सी अभिव्यक्ति हूँ

जीवन में आशायें भर कर, जीवन को परिभाषा दूँ
अधरों को मीठे स्वर देकर, नयनों को मैं भाषा दूँ
दुर्गम पथ पे चलना सीखो, हर मुश्किल आसान करो
स्वयं सशक्त बनो इतना कि सपनों में सुर तान भरो
मैं दुर्बलता के क्षण-क्षण की घोर विरोधी शक्ति हूँ
मैं एक कवि हूँ, अहसासों से भरा हुआ एक व्यक्ति हूँ

कर्तव्यों को याद करूँ, फिर अधिकारों की बात करूँ
कुदरत की शर्तों पर अपने जीवन की शुरुआत करूँ
मानवता के मूल्य सदा ही निजी हितों से परे रखूँ
दुखी जनों की व्यथा बाँटकर पथपर अपने चले चलूँ
मैं बाधाओं को सुलझाती एक आजमायी युक्ति हूँ
मैं एक कवि हूँ, अहसासों से भरा हुआ एक व्यक्ति हूँ



तृप्ति हूँ, संतुष्टि हूँ मैं, भक्ति हूँ, शिव - शक्ति की
सृष्टि का संरक्षक हूँ मैं, कण-कण की उत्पत्ति भी
परम सत्य जीवन का माना, सबको आना-जाना है
चार पलों में फैला कितना, झूठा ताना-बाना है
दर्पण से परे करे दर्शन जो वो एक अद्भुत दृष्टि हूँ
मैं एक कवि हूँ, अहसासों से भरा हुआ एक व्यक्ति हूँ

सुबह-२ हल लेकर बैलों संग खेतों की ओर चलूँ
दुआ सलामों को दोहराते हर पग मंजिल ओर धरूँ
अपने खेतों - खलियानों को, मैं अपना सम्मान कहूँ
वर्षा-धूप-पवन को अपना मैं तो बस भगवान् कहूँ
मैं क्षण-क्षण का अद्भुत संचय, सच्ची सुर-समृद्धि हूँ
मैं एक कवि हूँ, अहसासों से भरा हुआ एक व्यक्ति हूँ

मुझमें इमली सा खट्टापन, आमों सा मीठापन है
मुझमें फाल्गुन में सरसों का, लहराता पीलापन है
पूरब-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण की खुशबू मुझसे बहती
और तिरंगे की गरिमामय छवि मुझमें हर पल बसती
मैं भारत की पग-पग धरती की सोंधी सी मिट्टी हूँ
मैं एक कवि हूँ, अहसासों से भरा हुआ एक व्यक्ति हूँ

समय सरीखा अद्भुत पंछी, अम्बर का अभिलाषी हूँ
मैं अतीत की स्मृतियों संग, जीता भारतवासी हूँ
तन से मैं सन्यासी ठहरा, मन में मुनियों सा मंथन
परिवर्तन के हर एक पहलू पर रहता अपना चिंतन
मैं भारत के वीर सिपाही की बिनखोली चिट्ठी हूँ
मैं एक कवि हूँ, अहसासों से भरा हुआ एक व्यक्ति हूँ



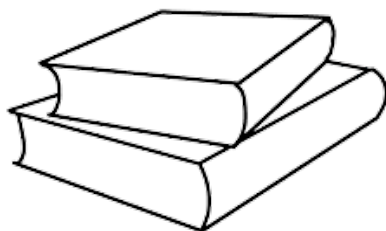
२८) किस्से तो कुछ और ही हैं

किस्से तो कुछ और ही हैं, कुछ और बताये जाते हैं
सच इतना, हर दौर में बस, कमजोर सताये जाते हैं

इतिहास में कैसे यकीं करूँ, इतिहास लिखाये जाते हैं
बस सत्ता की तारीफों में, अल्फ़ाज़ सजाये जाते हैं
जो जिया गया, जो किया गया, वो भस्म हुआ बीते कल में
हर बार हकीकत के किस्से, किरदार छुपाये जाते हैं
सच इतना, हर दौर में बस, कमजोर सताये जाते हैं

जो सच बोले, सँघर्ष करे, वो क़त्ल कराये जाते हैं
जो करे समर्थन सच का वो बेअक्ल बताये जाते हैं
उन्हें देशद्रोह का दाग मिले, जो हैं न सहमत सत्ता से
चमचे सत्ता के राष्ट्र सृजन के भक्त बताये जाते हैं
सच इतना, हर दौर में बस, कमजोर सताये जाते हैं

अर्थ से ढककर तथ्यों के, कुछ अर्थ छुपाये जाते हैं
जो निर्दोष-निरक्षर हैं, वो व्यर्थ सताये जाते हैं
चंद अमीरों के चंदे से, जब सरकारें बनती हैं
तब बुनियादी सुविधाओं में फ़र्क़ बढ़ाये जाते हैं
सच इतना, हर दौर में बस, कमजोर सताये जाते हैं



धनबल-जनबल का दुरुपयोग कर वोट बढ़ाये जाते हैं
लालच दे, सपने दिखा-दिखा, सब जोर लगाये जाते हैं
सत्ता की सुख-सुविधा में, हर हाल में हिस्सेदारी को
नैतिकता को ताक़ पे धर, गठजोड़ बनाये जाते हैं
सच इतना, हर दौर में बस, कमजोर सताये जाते हैं

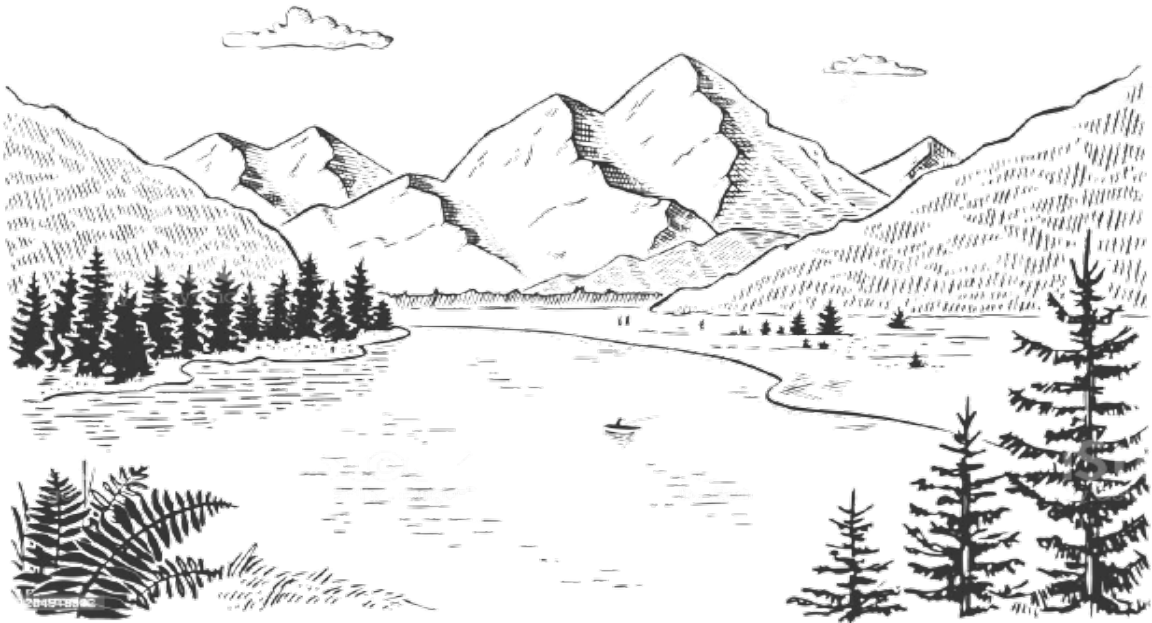
हम धरम-आस्था के वश में ऐसे भरमाये जाते हैं
कि जीवन के सच्चे मूल-मंत्र से, दूर भगाये जाते हैं
कब तक आखिर हम समझेंगे, इस लाचारी-बीमारी को
जो राम कहीं, रहमान से हम, यूँ मूर्ख बनाये जाते हैं
सच इतना, हर दौर में बस, कमजोर सताये जाते हैं

शासन हथियाने को, हथकण्डे अपनाये जाते हैं
हर एक गाँव में कितने ही झण्डे लहराये जाते हैं
घर-आँगन बाँट रहे झण्डे, लोगों को बाँट रहे झण्डे
फिर बनी भिखारी जनता पर डण्डे बरसाये जाते हैं
सच इतना, हर दौर में बस, कमजोर सताये जाते हैं

जो आवाज़ विरोधी हो, वो बोल दबाये जाते हैं
सत्ता की हर वर्षगाँठ पर, ढोल बजाये जाते हैं
भ्रष्ट तंत्र का मंत्र यही बस, करना है कुछ काम नहीं
खुल्लम-खुल्ला अपराधों के झोल बढ़ाये जाते हैं
सच इतना, हर दौर में बस, कमजोर सताये जाते हैं

२९) ज़िन्दगी

ज़िन्दगी किसी दरिया की तरह जन्म लेती है
फिर मंद-मंद मुस्कुराती हुई, अपने गन्तव्य की ओर चल देती है
कभी इधर-उधर की चट्टानों से टकराकर बिखर जाती है
फिर अगले ही पल सँभलकर आगे बढ़ती जाती है
कभी समतल में पसर कर मानों विश्राम करती है
तो कभी ढलान पर आकर जानों सरपट दौड़ती है
हाँ कुछ इसी तरह गिरते-उठते, चलते-फिरते
अपने मुकाम तक पहुँच ही जाती है
फिर समंदर में सिमट कर, कुछ पल सुस्ताती है
और धीरे-धीरे वक्र के सहारे यादों की ऊष्मा में
भाप बनकर बादलों के संग बहकर पूरी दुनिया घूम आती है
पर कभी इस कदर भी रुठती है खुद से कि
बादलों की बूँद यानी आँसू बनकर बिखर जाती है
और फिर सिमट कर एक दरिया का जन्म लेती है
और मंद-मंद मुस्कुराती हुई, अपने गन्तव्य की ओर चल देती है
बिखरकर सिमट जाना ही ज़िन्दगी कहलाती है
बहते हुए आँसुओं के बाद ही, कोई खुशी नज़र आती है



३०) हिन्दी

जहाँ ये भाषा देश के लोगों के माथे की बिंदी है
वहीं आज यह राष्ट्र की भाषा, सबसे प्यारी हिन्दी है

जहाँ काव्य कृतियों से इसको, घर-घर में सम्मान मिला
जहाँ आज हर हृदय में जिसका, अपना हिन्दुस्थान खिला
जहाँ 'गुप्त' की अनुपम कृतियाँ, सबको आज रिझाती हैं
जहाँ काव्य कृतियाँ 'दिनकर' की, रहना एक सिखाती हैं

और जहाँ पर छंद - कवित्तों की संख्या एक लम्बी है
वहीं आज यह राष्ट्र की भाषा, सबसे प्यारी हिन्दी है

जहाँ पे 'बच्चन' की 'मधुशाला' ने सबको मदहोश किया
जहाँ प्रसाद-निराला ने फिर, जीवन में कुछ ओज दिया
जहाँ 'पन्त' और 'धर्मवीर' ने जन-जन को आगाह किया
जहाँ हजारों कवियों ने, फिर नफ़रत को तबाह किया

और जहाँ पर हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-मराठी सिंधी है
वहीं आज यह राष्ट्र की भाषा, सबसे प्यारी हिन्दी है

जहाँ पे "मीराबाई" के, हर शब्द में प्रेम पिरोया हो
जहाँ पे मुंशी प्रेमचंद की, कृति में दर्द भी रोया हो
जहाँ कि बाबा नागार्जुन की, कविता में जन पीड़ा हो
जहाँ प्रदीप के गीतों में, वीरों की शहादत जिन्दा हो

और जहाँ पर प्रेम की सबसे हसीं इमारत अब भी है
वहीं आज यह राष्ट्र की भाषा, सबसे प्यारी हिन्दी है

जहाँ 'रहीम' - 'कबीर' के दोहों, पर सब चिंतन करते हैं
जहाँ 'सूर'-'रसखान' के रस का सब अभिमंजन करते हैं
जहाँ महादेवी वर्मा के, गीतों की धुन है मिलती
जहाँ कि तुलसी रामायण, घर-घर में सुनने को मिलती

और जहाँ पर वेद - पुराणों की भाषा ये कुंजी है
वहीं आज यह राष्ट्र की भाषा, सबसे प्यारी हिन्दी है

धीरे-धीरे विश्व पटल पर, भाषा है ये फैल रही
सीधा-सरल स्वभाव है इसका रहे किसी से वैर नहीं
निज भाषा के ज्ञान बिना क्या, देश प्रगति कर पाते हैं
विकसित देश धरा के सारे, निज भाषा अपनाते हैं

आज जहाँ पर अंग्रेजी ही, दिन-प्रतिदिन प्रतिद्वंदी है
वहीं आज यह राष्ट्र की भाषा, सबसे प्यारी हिन्दी है

३१) कैसा गणित रहा

बस्ती-बस्ती विचरण करता, मैं एक प्यासा पथिक रहा
जोड़-घटाने वाली दुनिया का, यह कैसा गणित रहा

जब-जब मुझको पड़ी ज़रूरत, अपनेपन के प्यार की
तब-तब आयी हिस्से में बस, लोगों की दुत्कार ही
पग-पग सबके व्यवहारों से, कितना होता व्यथित रहा
जोड़-घटाने वाली दुनिया का, यह कैसा गणित रहा

एक तरफ दुनिया का हिस्सा, डूबा है सुख वैभव में
और दूसरी ओर न जाने कितने सहमें दुःख, भय में
मानव तेरा, आता-जाता, सुख-दुःख कितना क्षणिक रहा
जोड़-घटाने वाली दुनिया का, यह कैसा गणित रहा

अपने ही आस्तित्व को लेकर, जब भी संकट विकट रहा
शून्य ताकत रहा अकेले, कौन था आखिर निकट रहा
अपने ही दुर्गम पथ पर हर एक, पीड़ा सह कर त्वरित रहा
जोड़-घटाने वाली दुनिया का, यह कैसा गणित रहा

अपनी हर एक परिस्थिति को, कभी किसी से कहा नहीं
जिसने समझा दूर हुआ वह, फिर कहने को कुछ रहा नहीं
अपमानों का दौर हमेशा, कितना होता कृमिक रहा
जोड़-घटाने वाली दुनिया का, यह कैसा गणित रहा

जब भी, जहाँ भी, मुड़ कर देखा, विस्तृत दुनियादारी को
जितना समझा - उतना उलझा, देख के हर बीमारी को
चार पलों के जीवन में, आडम्बर कितना अधिक रहा
जोड़-घटाने वाली दुनिया का, यह कैसा गणित रहा

जब धरम-धरम की सीख एक है, एक ही सृष्टि निर्माता है
फिर क्या मुल्ला, फिर क्या पण्डित, सबका एक विधाता है
जाति-धरम के जंजालों में मानव कितना भ्रमित रहा
जोड़-घटाने वाली दुनिया का, यह कैसा गणित रहा

३२) शिक्षक

ब्रम्हाण्ड की हर घटना का, रहस्य बड़ा निराला है
प्रकृति का विशाल रूप, एक बृहद पाठशाला है
नदियाँ, जो अपनी राह बनाना सिखाती हैं
कलियाँ, जो सदा मुस्कुराना सिखाती हैं
झरने, जो गिरकर सँभलना सिखाते हैं
पेड़-पौधे, जो अपने फल-फूल देकर,
निःस्वार्थ सेवा का भाव जगाते हैं
नन्हें जुगनूँ, जो किसी सूरज के मोहताज़ नहीं
हमें, अँधेरे को चीरना सिखाते हैं और
नन्हें परिन्दे जो आसमान में अठखेलियाँ किया करते हैं
हमें आज़ादी की उड़ानें भरना सिखाते हैं
चाँद-तारे, जो रौशन जहान करते हैं
ताउम्र हमें चमकते रहना सिखाते हैं
हर सीख, वास्तव में अमूल्य है
बिना ज्ञान के सबकुछ है, पर शून्य है

माँ जो बोलना सिखाती है, प्रथम शिक्षक है
पिता जो चलना सिखाता है, एक शिक्षक है
वो व्यक्ति जो अक्षरों की पहचान कराये, एक शिक्षक है
वो व्यक्ति जो ज्ञान के सागर में डूबना सिखाये, शिक्षक है
शिक्षक वह हर व्यक्ति है, जो गलत रास्ते से मुड़ना सिखाये
शिक्षक वह हर व्यक्ति है, जो सही रास्ते पे चलना सिखाये
असहज परिस्थितियों में जो सहज बनाये, वह शिक्षक है
चुनौतियों को जो स्वीकार करना सिखाये,
विश्वास जगाये, वह शिक्षक है
जो निर्भीक बनाये, विवेकशील बनाये,
चरित्र का निर्माण निखारे, वह शिक्षक है
ऐसे सभी शिक्षकों के समक्ष मेरा, सहृदय नत मण्डक है
पर वास्तव में हर व्यक्ति स्वयं ही अपना शिक्षक है
प्रकृति की पाठशाला में व्यक्ति का दैनिक अनुभव एक वृहद पुस्तक है
आपके प्रयास ही निर्धारित करते हैं आपका गंतव्य
इतिहास का एक श्रेष्ठ उदाहरण है अद्वितीय एकलव्य

३३) चार पल हँस-वँस के

जियो जिंदगी के चार पल हँस-वँस के
थोड़ा हो के दूर दुनिया नूं झँझट से

छोटी-छोटी खुशियों से दूर हो के दुनिया
बड़ी-बड़ी खुशियों की करती तलाश है
बड़े-बड़े बँगले ओ बड़ी-बड़ी गड़ियां हैं
बाद भी तो इतने के आदमी उदास है
खूब जानता हूँ दुनिया के रँग-ढँग ये
जियो, जिंदगी के चार पल हँस-वँस के

हो के दूर अपनों से, छोड़ के सुकून-चैन
रात-दिन, दौड़ा-भागा, टेढ़े-मेढ़े रास्ते
अनमोल रिश्तों के ज़ब्बात ताक पर
रख के क्यूँ भागता है रुपियों के वास्ते
तय कर ले सफ़र, थोड़ा रुक-रुक के
जियो, जिंदगी के चार पल हँस-वँस के

अगले ही पल जाने होवे क्या, ख़बर किसे
बढ़ना सँभल के, ये ज़िन्दगी अज़ीब है
गाओ-मुस्कुराओ, यारा नूं गले लगाओ यार
प्यार भरी दोस्ती तो सबको अज़ीज है
यारा, ज़िन्दगी ये जाने कब करवट ले
जियो जिंदगी ये यार थोड़ा हँस-वँस के

३४) हम सबकी ये ज़िन्दगी

कभी है खुशियों की बारिश सी, कभी गमों की धूप कड़ी
कभी लगे ये पल दो पल की, कभी लगे ये बहुत बड़ी
कुछ ऐसी है ज़िन्दगी, हम सबकी ये ज़िन्दगी

कभी-कभी मन ही मन कुछ इतराकर ऐसे चलती है
जैसे धूप उतर कर धरती पर कलियों से मिलती है
कभी करे ये हँसी-ठिठोली, कभी करे ये ख़ूब ठगी
कुछ ऐसी है ज़िन्दगी, हम सबकी ये ज़िन्दगी

कभी इसे जीने की ज़िद का नशा है कुछ ऐसा छाता
जो सपने में कभी ना सोचा, वो पल भर में हो जाता
कभी लगे सोई-सोई सी, कभी लगे ये जगी-जगी
कुछ ऐसी है ज़िन्दगी, हम सबकी ये ज़िन्दगी

कभी ये बच्चों सा घर-आँगन, खेले, दौड़ लगाये
कभी जवानी सा नादिया के तीरे वक़्त बिताये
कभी बुढ़ापे सा सरके ये, थाम के लम्बी एक छड़ी
कुछ ऐसी है ज़िन्दगी, हम सबकी ये ज़िन्दगी

३५) इतना भी आसान नहीं है

इतना भी आसान नहीं है, घर से बाहर रह पाना
आती-जाती हर मुश्किल को सबसे ज़ाहिर कर पाना

जब भी हफ़्ते दो हफ़्ते में, घर से बातें होती हैं
फीकी सी मुस्कान लिए तब, नम ये आँखें होती हैं
इधर-उधर की बातें करके प्रश्न टाल मैं देता हूँ
किसी बहाने घर में सबके, हाल चाल मैं लेता हूँ
कह देता हूँ, अच्छा हूँ मैं, कहो भला तुम कैसे हो
बदले-वदले हो थोड़ा सा या फिर पहले जैसे हो
सभी शिकायत करते हैं कि याद नहीं करता हूँ मैं
कभी शिकायत करते हैं कि बात नहीं करता हूँ मैं
कैसे उनको बतलाऊँ कि घुट-घुट कर मैं जीता हूँ
छल-कपट-झूठ वाली दुनिया से कैसे रोज़ निपटता हूँ
घुटन भरी साँसों से जब-जब, विकट अकेलापन लिपटा
देखा है तब-तब आँखों से, एक सागर का बह जाना
इतना भी आसान नहीं है, घर से बाहर रह पाना

कमरे की चार दीवारें केवल खुलकर बातें करती हैं
कुछ घण्टों की रातें मुझको बरसों जैसी लगती हैं
तकनीकी वाली ये दुनिया, कितनी तनहा रहती है
क्यूँ साँसों की कड़ी-कड़ी हर, सौ कज़ों सी लगती है
गुजरे लम्हों की बस्ती में, अनगिनत कहानी किस्से हैं
और न जाने उसमें कितने, सिर्फ़ हमारे हिस्से हैं
बचपन के अल्हड़पन से अब, याद बहुत कुछ आता है
दो पैसों के चक्कर में बस, कितना-कुछ लुट जाता है
घर से निकला था मंज़िल को पाने की एक जिद लेकर
रस्ते में सौ बार है होता, धक्का खाकर गिर जाना
इतना भी आसान नहीं है, घर से बाहर रह पाना

३६) नंगा नाच

मौत का देखा नंगा नाच
न आई नेताओं पर आँच
न आई बेशरमों को लाज
रहे हर हाल में सत्ता पास

कितनी ज़िम्मेदार है सत्ता
कितनी ज़िम्मेदार है जनता
सौ बातों का एक ही सच था
जीने का तो सबका हक था
चुनाव नहीं टल सकता था क्या
कल ये नहीं हो सकता था क्या
कभी क्या, होगी कोई जाँच
मौत का देखा नंगा नाच

जाने कितने बिखरे रिश्ते
दुखड़े आखिर किससे कहते
आक्सीजन की कमी बड़ी थी
आकर मौत बगल में खड़ी थी
जो था राष्ट्र का प्रमुख प्रणेता
राजनीति में व्यस्त था रहता
नहीं दिखी उसको कोई गलती
ऊपर से सरकारी धमकी
कोई जो, कहता कुछ भी साँच
मौत का देखा नंगा नाच

नज़र जहाँ तक था कुछ आता
पाँव पसारे था सन्नाटा
लोग सभी थे सहमें-सहमें
हुए थे कितने दफ़न ज़मीं में
कितनी चिताएँ धधक रहीं थी
शमशानों में जगह नहीं थी
नहीं थे, जुटते लोग भी पाँच
मौत का देखा नंगा नाच

कुछ डॉक्टर ऐसे भी देखे
कोविद से जो लड़े थे खुल के
कुछ तो बड़े दयालु भी थे
कई बड़े झगड़ालू कुछ थे
कुछ थे भगवानों से बढ़कर
कुछ निकले अंगों के तस्कर
यकायक, गुज़रे लोग थे ख़ास
मौत का देखा नंगा नाच

मुँह माँगा था मूल्य दवा का
प्राण से बढ़कर दाम हवा का
सौदा होता था साँसों का
हाल ये देखा है आँखों का
बाज़ारों में बेरहमी थी
बस पैसों की ही गरमी थी
दुबारा, दौर न आए काश !
मौत का देखा नंगा नाच

३७) सारे ज़हाँ में तू है

या रब तेरी मौजूदगी, ज़रें तलक में है
सारे ज़हाँ में तू है, अहले फ़लक में है

जिसमें अदब है रौशन, जो ईमां परस्त है
उस शख्स में है दिखता, तेरा ही अक्श है
तेरे ही हुक्म से है, रफ़्तार वक़्त की
तेरी ही रहमतों से, हर साँस नब्ज़ की
तेरा ही ज़िक्र हर शय, तू ही हलक में है
या रब तेरी मौजूदगी, ज़रें तलक में है
सारे ज़हाँ में तू है, अहले फ़लक में है

कुदरत का करिश्मा हर, तेरा ही करिश्मा है
रौनक़ है तुझसे, तू ही, जलता हुआ शमा है
हर ओर तेरा जलवा, तू बेमिशाल है
तुझसा नहीं है कोई, सबका ख़याल है
तू ही है हक़ में सबके, सबकी सनद में है
या रब तेरी मौजूदगी, ज़रें तलक में है
सारे ज़हाँ में तू है, अहले फ़लक में है

३८) समझ

सब समझते हैं हम, पर उलझते नहीं
वो समझते हैं हम, कुछ समझते नहीं

अश्रु आँखों में हैं, कि समंदर कोई
बादलों सा कभी, हम बरसते नहीं

हमने अपनी समझ से है समझा तुम्हें
और कहते हो तुम, हम समझते नहीं

वक्त के सँग ये दुनिया बदलती है रँग
वक्त की चाल को, हम समझते नहीं

राह मुश्किल हो, आसां हो, बेफ़िक्र हो
आगे बढ़कर कभी, हम पलटते नहीं

बात ही बात में, हो कोई बात भी
बात कहकर कभी, हम मुकरते नहीं

आँख खोलो, रखो कान भी खोलकर
बिगड़े हालात, जल्दी सँभलते नहीं

ये समझ, नासमझ की है अपनी समझ
क्या समझता है वो, हम समझते नहीं

३९) काश !

काश ! फिर कोई ऐसा सवेरा होता
जिसमें मैं तेरा और तू मेरा होता

कभी ज़िन्दगी मेरी, तेरे लिए ख़ास होती
कभी तू मेरी धड़कनों का अहसास होती
कभी अनकहा तेरा, मैं सुन लिया करता
कभी बाँहों में तुझको, भर लिया करता
बहकती साँसों पे तेरा ही पहरा होता
काश ! फिर कोई ऐसा सवेरा होता

कभी चंद लम्हों में, खुशियाँ सागर भर होतीं
कभी तेरे बग़ैर, मेरी अँखियाँ गागर भर रोतीं
कभी जलता दिया तेरे नाम से ही शब भर
कभी होती बेकरारी, तेरे रूठने से पल भर
जलते शम्म बन, गर कहीं अँधेरा होता
काश ! फिर कोई ऐसा सवेरा होता

मुहब्बत से मेरी, मिलतीं तुझे, अपार खुशियाँ
कुछ ऐसे हम, पल भर में जी लेते हजार सदियाँ
इक साए की तरह, मैं तेरा, एक हमसफ़र बनता
तेरी मुस्कराहट से, मेरी खुशियों का शहर सजता
हर फ़िक्र में, बस तेरा ही चेहरा होता
काश ! फिर कोई ऐसा सवेरा होता

क्या बिसात है इस ज़िन्दगी की, कोई बताये मुझे
क्या छिपा राज है हर खुशी का, कोई बताये मुझे
मोहब्बत के बगैर, फिर ज़िन्दगी का वजूद ही क्या
जो समझे ना, दिल की बात, वो महबूब ही क्या
प्यार का रंग भी, लहू सा गहरा होता
काश ! फिर कोई ऐसा सवेरा होता

मुस्कराहट पाने और लुटाने में खुशी मिलती
रुठने और मनाने में दिल को तसल्ली मिलती
ज़माने से लेते जितना, कहीं ज्यादा देते हम
नज़रों के मिलते ही बस मुस्कुरा देते हम
तेरी पलकों पर हया का डेरा होता
काश ! फिर कोई ऐसा सवेरा होता

ज़िन्दगी कोई जंग नहीं, ये तो हसीं गुलशन है
मोहब्बत के रंग भरो, गर कोई भी अनबन है
बातों में रहते हम, लोगों की आज भी
यादों में रहते हम, ज़िन्दगी के बाद भी
साथ होते, ये वक़्त भी ठहरा होता
काश ! फिर कोई ऐसा सवेरा होता

अधूरे सफ़र का, अगर तू हमसफ़र बनता
हर शब्द में होता तू, जब भी मैं कुछ लिखता
यूँ किसी गुलशन के, फूल बनकर जीते हम
सारी कायनात में खुशबू बन बिखरते हम
ज़िन्दगी होती मुक़म्मल, ख़्वाब भी पूरा होता
काश ! फिर कोई ऐसा सवेरा होता
जिसमें मैं तेरा और तू मेरा होता

४०) इश्क़

कहीं इश्क़ इबादत सा है लगे कहीं इश्क़ कि जैसे इक लत है
या मौला कभी आ देख ज़रा, इस इश्क़ की कैसी हालत है
इक इश्क़ कि जिसमें मरना भी, सदियों तक जीना लगता है
उस इश्क़ में पागल-दीवाना, दिल अब भी दीवाना लगता है

ये वक़्त भी कितना ज़िद्दी है ? देखे है ना मुड़के पीछे कभी
गलती भी नहीं इसकी कुछ भी, देखे हैं जो इसने दौर सभी
ग़म-खुशियाँ, मौसम, लोगों का, बस आना-जाना रहता है
हर दौर में पागल दीवाना, दिल अब भी दीवाना लगता है

इक दिल की जुबां दिल ही समझे, बाक़ी सब खेल तमाशा है
एक उम्र तमाम जो गुजरी है, बस उसका ही ज़िक्र ज़रा सा है
होंठों पे हँसी रख कर जिसमें, अश्कों को छुपाना पड़ता है
उस इश्क़ में पागल-दीवाना, दिल अब भी दीवाना लगता है

हर एक मुश्किल हालात में जो, साथी हों साथ, वो कितने हैं
मतलब के सब रिश्तों के सभी, किरदार भी कितने बौने हैं
जब खुद का ही बेज़ान बदन, खुद को ही उठाना पड़ता है
तब इश्क़ में पागल-दीवाने, दिल को समझाना पड़ता है
वो और ज़माना था कोई, ये और ज़माना लगता है

४१) क्या कहूँ

क्या कहूँ कि कोई चाँदनी रात है
या कहूँ कि मोहब्बत का अहसास है
गुलशनों की महकती बहकती हवा
ऐसे आलम में कुछ ख़ास ऐसा हुआ
कि एक-दूजे में दो आज दिल खो गये
एक मैं हो गया, एक तुम हो गये

हम तो हैरान हैं, देख कर ये ज़हां
होश ये भी न है, हम खड़े हैं कहाँ
खुद को खुद में कहीं खोजते-खोजते
रात भर जाने क्या, सोचते-सोचते
आज फिर घर में दो नैन नम हो गये
एक मैं हो गया, एक तुम हो गये

भूल के दुनिया की हर वो झूठी रशम
जो भी फैला रहीं सिर्फ़ कोरे भरम
धूप में देह को सेंकते - सेंकते
ख़्वाब के रूप को देखते - देखते
दो दीवानें जहां का सितम ढो रहे
एक मैं हो गया, एक तुम हो गये

कैसा है ? ये जहां तुमसे क्या मैं कहूँ
जब कि महबूब को ही खुदा मैं कहूँ
अपनों को अपना हम मानते-मानते
हर हकीकत को हम जानते-जानते
दो दिलों के हसीं कारवां थम गये
एक मैं हो गया, एक तुम हो गये

मैं मोहब्बत का कोई तो किरदार हूँ
हाँ किसी ज़िन्दगी का मैं संसार हूँ
ज़िन्दगी को यहाँ ढूँढ़ते - ढूँढ़ते
तिनका-तिनका खुशी जोड़ते-जोड़ते
दो घरों के मुकम्मल करम हो गये
एक मैं हो गया, एक तुम हो गये

जब तलक कि जहां में मैं ज़िन्दा रहूँ
तब तलक यार तुझपे मैं मरता रहूँ
है मोहब्बत की कैसी ये जादूगरी
दूर रह कर दिलों में न दूरी बढी
रास्ते मिल के दो, एक सफर हो गये
एक मैं हो गया, एक तुम हो गये

४२) बड़ा सा घर बँटा

इक बड़ा सा घर बँटा, और अब ज़रा सा रह गया
कुछ इस तरीके से, तरक्की का तमाशा बन गया

क्या खता कि अब खतों में वो ख़बर मिलती नहीं
जो आपबीती घर के कूड़े का लिफ़ाफ़ा कह गया

बस बुढ़ापे में बसर हो साथ बच्चों के सही
ये सोचना था, पर हकीकत में अकेला रह गया

हमसफ़र जो जा बसा, किसी और दुनिया में कहीं
उसे क्या ख़बर कि दर्द में कित्ता इजाज़ा कर गया

उजाले में सरेआम, फसादों में तमाशे का वाक्या
इंसानियत के खोखलेपन का खुलासा कर गया

४३) होना चाहिए

भुजंग सा कुसंग और ढोंगियों सा ढंग
मुझे जातियों पे जंग, हुड़दंग नहीं चाहिये
रंग जो भरे उमंग, करे न समाज भंग
देश खुशहाल बने, ऐसा रंग चाहिये

कोई ना किसी को, करे तंग, चले सब संग
दुनिया हो देख दंग, संबंध ऐसा चाहिये
रंज का खुमार मिटे, दिखे हाल चाल चंग
चंद चाक चोरों का न फंद कोई चाहिये

मन है मृदंग जैसे, उड़ती पतंग जैसे
किसी सत्संग की, तरंग होनी चाहिये
बंद हों प्रपंच सारे, मंद न हों नंद प्यारे
ऐसे रंग संग की, सुगंध होनी चाहिये

राजा हो या चाहे रंक, सोंच को सँभाले संत
प्यार हो अनंत, नहीं अंत होना चाहिये
देश हो अखंड, शक्ति -भक्ति हो ज्वलंत
हर खंड में बसंत अब बुलंद होना चाहिये

४४) मोहब्बत

नफ़रत की जो सूरत बदले, वो तो सिर्फ़ मोहब्बत है
बाक़ी सबकुछ इस दुनिया में, मतलब और जरूरत है

हक्र हैं जताते खुशियों पे सब, कौन किसी का ग़म है उठाता
कौन है भरता तेल दिये में, जलते-जलते जो बुझ जाता
आती - जाती दौलत के मद में, जो चूर है, वो मूरख है
नफ़रत की जो सूरत बदले, वो तो सिर्फ़ मोहब्बत है

बदली हुकूमत है मुल्कों में, जाने कितनी बार दफ़ा
हर एक दौर में, हर कीमत से, परे रहे हैं प्यार-वफ़ा
बाक़ी सब चीज़ों की जग में, कुछ न कुछ तो कीमत है
नफ़रत की जो सूरत बदले, वो तो सिर्फ़ मोहब्बत है

४५) हारकर अपनों से देखो

हारकर अपनों से देखो, जीत का अहसास होगा
जो था इतना दूर कब से, फिर तुम्हारे पास होगा

दुश्मनी का हल हो बेहतर, दुश्मनी से क्यों भला
दोस्ती का हाँथ बढ़ना ही सही अंदाज़ होगा

जलता जिगरा है जलाता, एक ज़िंदा जिस्म को
बेवज़ह ही इस तरह से, एकदिन सब खाक़ होगा

रुठें अपने तो मनाने में नहीं करना हिचक
रुठने वाला ही अक्सर, सच में सबसे ख़ास होगा

जीतने की ज़िद में आख़िर, हार जाते लोग हैं
हारकर अपनों से देखो, जीत का अहसास होगा

४६) जब भी मुड़ता हूँ

जब भी मुड़ता हूँ मैं, तेरी यादों की तरफ
चला जाता हूँ मैं अक्सर, बड़ी दूर तलक

जाते-जाते एक जंगल में, खो मैं जाता वहीं
जहाँ से मिलती नहीं लौट आने की सड़क

बस एक ख्याब में देखा जो जुदा होते हुए
अशक आँखों में नहीं थमते, जाते हैं छलक

मेरे महबूब जरा मुझ पर, रहम करके कोई
करीब आके मेरे, कभी तो, मेरी देख तड़प

ज़ख्म गहरे हैं, मरहम हो मोहब्बत का तेरी
करके शिकवे-गिले, ज़ख्मों पे छोड़ों न नमक

ये गुजारिश कि माफ़ करके मेरी गुस्ताखियाँ
मेरी बेशर्त मोहब्बत को, मेरे महबूब समझ

ज़माना तो ये कहता है, जाने क्या-क्या ?
सवाल्लों के जवाबों में, तू इस तरह न उलझ

बात दिल की है, जो तुमसे मैं, कहे देता हूँ
मेरी इस बात को यूँ ही तो समझो न गलत

४७) पीढ़ियों का बोझ

हो रहा है क्या यहाँ किसको रहा ये होश है
क्यूँ ज़माना, एक ज़माने से बड़ा ख़ामोश है

जी रहे हैं लोग जाने, कैसे-कैसे, किस तरह
फ़ासले इतने बढ़े जो इसमें किसका दोष है

कब तलक आख़िर रहेंगे लोग होकर बेख़बर
लोग हैं खुदगर्ज़ कितने बस यही अफ़सोस है

सूबे के सूबे सुलगने को बढ़े बेताब हैं
और देखो तो हवाओं में भी कितना जोश है

बादशाही मंसूबों की, हो तुम्हें भी इत्तिला
खोलकर आँखें तो देखो, हो रहा जो रोज़ है

मुझको तो मालूम पड़ता है मज़हबी सिरफ़िरा
तुम भी देखो मुल्क में कितना बढ़ा ये रोग है

क़र्ज़ में डूबे किसानों की कहानी क्या कहूँ
मुद्दतों से सिर पे जिनके, पीढ़ियों का बोझ है

४८) कमजोर नहीं हूँ

माना कि एक ख़ामोशी हूँ, शोर नहीं हूँ
ताक़तवर तो नहीं, मगर कमजोर नहीं हूँ

एक बंधन, बंध जाये जो, ताउम्र चले
बल खाते ही टूटे, कच्ची डोर नहीं हूँ

एक ज़र्रा हूँ, क्या अपना मैं परिचय दूँ
बिंदु मात्र हूँ, अंतरिक्ष का छोर नहीं हूँ

तुम जो हो, वो तुम जानो, क्या गरज मुझे
मैं सच्चा इंसान हूँ, कुछ भी और नहीं हूँ

बीता वक़्त कि जिसने सबकुछ लूटा हो
ज़ख्मों में ढल जाये, ऐसा दौर नहीं हूँ

कुश्ती तो दिल और दिमाग़ की होती है
दिल पर भारी पड़ जाये, वो जोर नहीं हूँ

४९) रब एक है

रब एक है, हम एक हैं, एक कायनात है
रिश्ता हमारा हर एक, ज़रों के साथ है

गुल, झील, ये हवायें, दरिया ओ समन्दर
कुदरत का करिश्मा बड़ा ही लाज़वाब है

ये तो खुदा ने इतनी इनायत है बख्श दी
वरना भला एक आदमी की क्या बिसात है

जब तक है सिलसिला ये साँसों का जिस्म में
कब आदमी को ग़म से मिलती निज़ात है

वैसे तो मज़हबों की खूबी है मोहब्बत
गर आदमी न मानें तो फिर और बात है

जब ज़रों तलक में उसका मौजूद है वजूद
कैसे कहूँ? हर वाकया एक इत्तिफ़ाक़ है

उसकी नज़र में हम सब, बन्दे हैं एक से
ये आदमी की गफ़लतें कि जात - पात है

मरता रहा वो राह में, लोगों की भीड़ में
इंसानियत की कितनी तबीयत ख़राब है

रहना सँभल के जाने कब बन जाओ तमाशा
लोगों का बहका - बहका रहता मिजाज़ है

बढ़ता रहा है फ़ासला लोगों के दरमयां
ये कोई तरक्की है, या फिर मज़ाक है

दहशतजदा माहौल है हर ओर मुल्क में
रहती नहीं ख़बर ये दिन है कि रात है

एक दौर था कि लोग जब एक-दूसरे के थे
अब आदमी ही आदमी के खिलाफ़ है

मुकाबलों के दौर में अब आम आदमी
बस ओहदे के वास्ते पढ़ता किताब है

ऊँचे दर्जों की उसे तालीम है हासिल
रोजी के लिए घर से बड़ी दूर आज है

जीने का सलीका, न तरीका, न वो अदब
बेशर्मी भरा लहज़ा औ झूँठा रुआब है

बीते पलों की हर एक ताज़ा तरीन याद
जैसे कि दवा की कोई कड़वी ख़ुराक है

पलभर में बदल जाती है तहसीर साँस की
अब आदमी की ज़िन्दगी जैसे कि ख़्वाब है

५०) खामोशियाँ

शहर में रौनक थी कलतक, आज बस खामोशियाँ हैं
सिलसिले हैं सिसकियों के, जल रहे अब आशियाँ हैं

कलतलक जिसके चमन सब, रात-दिन गुलज़ार थे
आज घर - आँगन में उसके, खून के मिलते निशाँ हैं

अबतलक मशहूर था यूँ, ये शहर तहज़ीब का
और अब बस्ती में बिखरीं, माँ - बहन की चूड़ियाँ हैं

ज़ख़्म पे मरहम लगाने, भी ना कोई आ सका
हर गली, नुक्कड़ पे अब जो, इसक़दर पाबंदियाँ हैं

माँ - बहन - मासूम बच्चे, बेइल्म हैं दंगों से ये सब
निहायती सीधों की देखो, उठ रहीं अब अर्थियाँ हैं

किस क़दर हैं खौफ़ खाये, लोग अपने ही घरों में
ख़ुशहाल था हर घर यहाँ, अब हरतरफ़ बर्बादियाँ हैं

क्यों हैं फैलीं आग का, शोला हैं बनकर नफ़रतें
हर तरफ़ बरपा कहर है, क्या रहीं मजबूरियाँ हैं

मायने मंदिर के क्या हैं, क्या है मक़सद मस्जिदों का
दरमयाँ लोगों के अबतक, बढ़ रहीं बस दूरियाँ हैं

५१) इश्क़ किसको नहीं

इश्क़ किसको नहीं, तू बता
इश्क़ से ही बना है ज़हाँ
इश्क़ दीवानापन, इश्क़ आवारापन
इश्क़ दिल की सदा, इश्क़ बेगानापन
इश्क़ ऐसा परिन्दा जिसे आज तक
चाँद छूने की चाहत रही ख़्वाब तक
इश्क़ है तो, ये सारा ज़हाँ
और इसके सिवा कुछ कहाँ

इश्क़ खुद से कहीं, है ख़ुदा से कहीं
इश्क़ तुझको है मुझसे, बता कि नहीं
बेवफ़ाई कहीं, है सजा ये कहीं
दर्द दिल का कहीं, तो दुआ है कहीं
इश्क़ की खुशबुएँ, कुछ लुटा
इश्क़ किस को नहीं, तू बता

इश्क़ में, होती मुमकिन मुलाक़ात भी
इश्क़ में, अशकों की होती, बरसात भी
इश्क़ में, है जुनूँ, तो सुकूँ है कहीं
इश्क़ में, पलते दिल में हैं ज़ज्बात भी
तेरे दिल में है क्या, ना छुपा
इश्क़ किस को नहीं, तू बता

इश्क़ देवे किसी को कभी बौखला
इश्क़ बेशक़ बढ़ावे कभी हौसला
इश्क़ ने है कभी ख़ूब जी भर छला
इश्क़ हो कर बुरा भी हुआ है भला
बोल दे, तू है किस पे फ़िदा
इश्क़ किसको नहीं, तू बता

इश्क़, गुल में है, गुलशन में, दरपन में है
इश्क़, रंगों में, ख़ुशबू में, धड़कन में है
इश्क़, यौवन में, बचपन में, हर क्षण में है
इश्क़, मौसम की मस्ती में, तन मन में है
इश्क़ मुझसे भी दे तू जता
इश्क़ किसको नहीं, तू बता

इश्क़ दिलकश हसीं, ग़मज़दा रात भी
इश्क़ में, अशकों की रहती बरसात भी
इश्क़ में, है जुनूं, तो सुकूं है कहीं
इश्क़ क्या-क्या नहीं, क्या कहूँ मैं अभी
तेरे दिल में है क्या, ना छुपा
इश्क़ किस को नहीं, तू बता

इश्क़ मुनियों को चिंतन-मनन से रहा
इश्क़ ऋषियों को ज्ञान सृजन से रहा
इश्क़ भक्तों को भक्ति-भजन से रहा
इश्क़ संतों को सत्य वचन से रहा
इश्क़ बेशक़ किसी को किताबों से है
इश्क़ अक्सर हुआ हुशन वालों से है
इश्क़ तुझको है किससे, बता
इश्क़ जीने की बेहतर अदा

५२) ऐ दिल

ऐ दिल तेरी गुस्ताखियाँ, ज़िंदा हैं आज भी
नतीजतन है रुह में, बिंदास आशिकी
महफूज़ जो चलन है, रश्में वफ़ा का अब तक
जिसकी वज़ह से दिल में मोहब्बत है आज भी

मैं कशमकश में हूँ अभी भी, ज़िंदगी की राह में
बेइन्तहां हैं चाहतें, पर सबकी सब हैं ख़्वाब में
क्यों नहीं दिल ये समझता, बंदिशों के मायने
क्यों लगाये पंख उड़ता, फिर रहा है बाग़ में

क्यों नहीं बंधती ये दुनिया, प्यार के एक राग में
ये ज़िंदगी अनमोल है, क्यों मिल रही है ख़ाक में
क्यों ज़माना है बँटा ये जातियों में मज़हबों में
बेवज़ह क्यों जल रहा है, नफरतों की आग में

यूँ हसरतें हज़ार, पल रही हैं, आज भी
कितनी हैं बेवज़ह और कितनी हिसाब की
ऐ दिल मेरे, रहना सदा हकीकतों से रु-ब-रु
इस इश्क़ में चलती नहीं, है कभी दिमाग की

५३) मैं तुझे प्यार दूँ, तू मुझे प्यार दे

साथ होंगे सदा, साथ हैं, साथ थे
मैं तुझे प्यार दूँ, तू मुझे प्यार दे

चाँदनी रात हो, बस तेरा साथ हो
दो दिलों का कोई, एक ही ख्वाब हो
मैं तेरा, तू मेरा, एक संसार हो
गर कभी कोई कैसी भी तकरार हो
तुझसे मैं हार कर, मुझसे तू हार के
मैं तुझे प्यार दूँ, तू मुझे प्यार दे

प्यार तो प्यार है, हर सलीका सही
ज़िन्दगी जीने का, है तरीका यही
नफ़रतों से हैं, जंगें न जीती गयीं
प्यार से नफ़रतें खुद-ब-खुद मिट गयीं
तोड़ कर सारे बंधन, ये संसार के
मैं तुझे प्यार दूँ, तू मुझे प्यार दे

हसरतें हों मगर, सब तुझी से ही हों
ख्वाईसों प्यार की, बस तुझी से ही हों
हो सरल ज़िन्दगी का, सफ़र तेरे संग
इस तरह एक - दूजे के, हो जाये हम
ग़म हो या हो खुशी, हम सभी बाँट के
मैं तुझे प्यार दूँ, तू मुझे प्यार दे

हो ज़िरह कितनी भी, न हो मैं और तुम
ज़िन्दगी का सफ़र, तय करें मिल के हम
एक नज़र, एक डगर, एक मंजिल भी हो
साथ मिलकर चलें कोई मुश्किल जो हो
यूँ ही बढ़ते रहे दरिया की धार से
मैं तुझे प्यार दूँ, तू मुझे प्यार दे

५४) दो पल मेरे, दो पल तेरे

प्यार का पंछी अम्बर में अब, चला रे पंख पसार के
चार पलों में, दो पल मेरे, दो पल तेरे प्यार के

रंग जाति का भेद भुलाकर, गुलशन में तितली घूमें
नीले-पीले-लाल- गुलाबी, फूलों को दिल से चूमें
चलो भूल सब सरहद मज़हब, एक अच्छा इंसान बनें
हर पल ऐसे जियें कि आने वाला कल वरदान बनें
कभी छिड़े तकरार तो जीतें, एक-दूजे से हार के
चार पलों में, दो पल मेरे, दो पल तेरे प्यार के

जीवन है एक उठा बुलबुला, कब बुझ जाए जानें कौन
शबनम सी नाज़ुक ये साँसें, कब गुम जाएँ जानें कौन
स्थिर हों हर हाल में, खुशियाँ - ग़म तो आते जाते हैं
रिश्ते पनपे हों दिल से तो, हर पल साथ निभाते हैं
अगर भटक मैं जाऊँ कहीं तो, लेना बुला पुकार के
चार पलों में, दो पल मेरे, दो पल तेरे प्यार के

शिकवा मेरा रहा हमेशा, बस इतना तुझसे है
सावन के मौसम में भी तू, दूर कहीं मुझसे है
इतना भी क्या, प्यार वफ़ा की रश्में निभा न पाए तू
सारी उम्र का लम्हा-लम्हा, तन्हा गुज़र न जाए यूँ
तोड़ दे, सारी रश्में-बंधन, मतलब के संसार के
चार पलों में, दो पल मेरे, दो पल तेरे प्यार के

प्यार की सतरंगी दुनिया से, सारे संग बने हैं
रूप तुम्हारा देख के, तुमसे गुल ने रंग चुने हैं
नैनो में काजल, सूरत में, सोलह चाँद लगाए
रंक से राजा बन जाए, तू जिसका साथ निभाये
चलों जियें अब साथ में ऐसे, जिसके हम हक़दार थे
चार पलों में, दो पल मेरे, दो पल तेरे प्यार के

५५) जीता रहा यहाँ

एक-एक पल बटोरकर मैं, जीता रहा यहाँ
हँस-हँस के बन हँसोड़ मैं, जीता रहा यहाँ

आँखों की पिछली पर्त में अशकों का ताल है
छुप-छुप के रात-दिन फिर, बहता रहा यहाँ

अब कौन रहा अपना ? जो खैर ले सके
खुद से ही गुफ्तगू कर, जीता रहा यहाँ

इक कतरे की औकात भर, मेरा वजूद है
लफ़्ज़ों में ज़िन्दगी को लिखता रहा यहाँ

जान कर कि ज़िन्दगी ये चार दिन की है
लोगों से मुस्कुराकर, मिलता रहा यहाँ

कब से न जाने आखिर, दुनिया की भीड़ में
किरदार मोहब्बत का, लुटता रहा यहाँ

इंसान हूँ, या रब तेरे, अहसान बड़े हैं
तेरा ही ज़हां मुझपे, हँसता रहा यहाँ

वो लोग थे पराये या थे तमाशबीन
जब आशियां हमारा, जलता रहा यहाँ

मौला सुना है तू तो मोहब्बत का है मुरीद
दर-दर पे जा के तेरे, झुकता रहा यहाँ

जब भी हुआ बेहाल तो, तेरी मिसाल दी
तूफ़ां में बन चराग मैं, जलता रहा यहाँ

मेरी पसंद और थी, उसकी पसंद और
इतनी जरा सी बात पे, लड़ता रहा यहाँ

उसके बगैर ज़िन्दगी जीने के नाम पर
हर एक साँस को मैं ढोता रहा यहाँ

मैले हैं लोग कितने, उजले लिबास में
इस बात का खुलासा, करता रहा यहाँ

वो शख्स जो मुझको, इतना बदल गया
उसपे ही गीत लिख के, पढ़ता रहा यहाँ

है ख़्वाब मेरा हमदम, मेरा अज़ीज़ है
दिल के करीब रहकर, पलता रहा यहाँ

हर बार की तरह फिर एक बार उसपे मैं
बस ऐतबार करके, मरता रहा यहाँ

५६) भली दुनिया, बुरी दुनिया

भली दुनिया, बुरी दुनिया, मोहब्बत की अलग दुनिया
किताबों से जुदा कितनी, हकीकत की अलग दुनिया

अफ़सरों की अलग दुनिया, मजूरों की अलग दुनिया
महक़मों से जुदा कितनी, किसानों की अलग दुनिया

सत्ता की अलग दुनिया, है जनता की अलग दुनिया
वायदों से जुदा कितनी, ज़रूरत की अलग दुनिया

मंदिरों की अलग दुनिया, मस्जिदों की अलग दुनिया
कुदरत के क़ायदों से, जुदा है अब तलक दुनिया

शहरों की अलग दुनिया, है गाँवों की अलग दुनिया
है कितना फ़ासला अब भी, दोनों की अजब दुनिया

कालों की अलग दुनिया, है गोरों की अलग दुनिया
है रंगों में हुई उलझी, हमारी अब तलक दुनिया

अमीरों की अलग दुनिया, ग़रीबों की अलग दुनिया
छोड़कर गाँव-घर अपना, भागती अब तलक दुनिया

लुटेरों की अलग दुनिया, फ़क़ीरों की अलग दुनिया
दोनों की कहानी और क्रिस्सों की झलक दुनिया

दरिंदों की अलग दुनिया, दीवानों की अलग दुनिया
क़दरदानों, मेहरबानों की, बिल्कुल है अलग दुनिया

भली दुनिया, बुरी दुनिया, मोहब्बत की अलग दुनिया
किताबों से जुदा कितनी, हकीकत की अलग दुनिया

५७) कम नहीं

आँखों में भरे अश्रु समंदर से कम नहीं
गुस्सा किसी तूफ़ान बवंडर से कम नहीं

दुनिया को दरकिनार कर तन्हाई भली है
यादें किसी तबाही के मंज़र से कम नहीं

अपने ही अज़ीज़ों की बातों का सलीका
चुभता है कलेजे में, खंजर से कम नहीं

झूठी हँसी लबों पर लेकर हूँ फिर रहा
पर दर्द हकीकत में है, अंदर से कम नहीं

एक दौर था जब इश्रक से भरपूर थी ग़ज़ल
दिल की ज़मीन अब तो, बंजर से कम नहीं

आँखों में जगह ख़्वाब की हैं अश्रु ले चुके
इक झूठी तसल्ली भी, मंतर से कम नहीं

अब आरजू नहीं है, मेरे दिल में कोई और
वरना कभी थे ख़्वाब, सिकंदर से कम नहीं

५८) तुम कितने जरूरी हो

अधूरी सी कहानी हूँ कि जो तुझसे ही पूरी हो
नहीं तुमको ख़बर इसकी कि तुम कितने जरूरी हो

मेरे दिल की सभी साँसें, तेरा ही नाम लें हरदम
हुआ जो इश्क़ तुझसे है, उसी की छेड़े ये सरगम
मुकम्मल ख़्वाब से बेहतर, किसी एहसास जैसे हो
करूँ जब बंद आँखे तो, लगे कि पास जैसे हो
नहीं पड़ता फरक कोई, भले कितनी भी दूरी हो
अधूरी सी कहानी हूँ कि जो तुझसे ही पूरी हो

मैं तुझमें खो गया ऐसा कि तेरी ही फ़िक्र रहती
सिवा तेरे किसी की भी ज़रूरत ही नहीं लगती
तेरी इक मुस्कराहट से, मिलें खुशियाँ मिटे हर ग़म
हज़ारों जन्मतों जैसा, हो तेरा साथ ओ हमदम
खतम होकर बहस सारी, दिलों की हाँ हुज़ूरी हो
अधूरी सी कहानी हूँ कि जो तुझसे ही पूरी हो

अधूरी सी कहानी हूँ कि जो तुझसे ही पूरी हो
नहीं तुमको ख़बर इसकी कि तुम कितने जरूरी हो

५९) कुछ भी नहीं अलाहिदा

कुछ भी नहीं अलाहिदा इस कायनात में
एक-दूसरे से सबका गहरा तआल्लुकात है

ये तो खुदा ने इतनी इनायत है बख्श दी
वरना भला एक आदमी की क्या बिसात है

जब तक है सिलसिला ये साँसों का ज़िस्म में
कब आदमी को ग़म से मिलती निज़ात है

वैसे तो मज़हबों की खूबी है मोहब्बत
गर आदमी न माने तो फिर और बात है

उसकी नज़र में हम सब, बन्दे हैं एक से
ये आदमी की ग़फ़लतें कि जात - पात है

मरता रहा वो राह में, लोगों की भीड़ में
इंसानियत की कितनी तबीयत ख़राब है

रहना सँभल के जाने कब बन जाओ तमाशा
अब आदमी का जाने कैसा मिज़ाज़ है

बढ़ता दिखे है फ़ासला लोगों के दरमयां
ये कोई तरक्की है, या फिर मज़ाक है

एक दौर था कि लोग जब एक-दूसरे के थे
अब आदमी ही आदमी के खिलाफ़ है

मुकाबलों के दौर में अब आम आदमी
बस ओहदे के वास्ते पढ़ता किताब है

बीते पलों की हर एक ताज़ा तरीन याद
जैसे कि दवा की कोई कड़वी ख़ुराक है

पलभर में बदल जाती है तहसीर साँस की
अब आदमी की ज़िन्दगी जैसे कि ख़्वाब है

६०) सच बताना

सच बताना कि तुम क्या सोच रहे थे
जब इंसान की लाश कुत्ते नोच रहे थे

कहीं माँ, बेटी, पिता, तो कहीं बेटा मरा
सरकार की नज़र में, बस लोग मरे थे

गिनती सही नहीं थी, झूठे थे आँकड़े
कितने दफ़न हुए थे, कितने लोग जले थे

कुछ भूँख से मरे, कुछ थक के मर गए
घर लौट आने को, जो लोग चले थे

डाला था उनको जेल में, हद थी गुरुर की
हिम्मत जुटाकर लोग जो, सच बोल रहे थे

सच बताना कि तुम क्या सोच रहे थे
जब इंसान की लाश कुत्ते नोच रहे थे

६१) सत्य

सत्य न सरिता, ना ही समंदर
सत्य न धरती, सत्य न अम्बर
सत्य न माया, सत्य न काया
सत्य तो केवल दर्पन पाया
सत्य हवा न, पानी सच है
बस बच्चों की वाणी सच है
सत्य न बाहर, सत्य न अन्दर
सत्य न धरती, सत्य न अम्बर

सत्य न सुख और दुःख का पल है, सत्य न आने वाला कल है
सत्य न जीवन की हलचल है, सत्य न छल और सत्य न बल है
सत्य न साँसें, सत्य न आँखें
सत्य न तेरी - मेरी बातें
साथ समय के बदले मंज़र
सत्य न धरती, सत्य न अम्बर

सत्य न गुलशन, न खुशबू है, सत्य न मैं और सत्य न तू है
सत्य न तन-मन का सफ़र है, सत्य न रग रग का ये लहू है
सत्य न नभ के चाँद सितारे, सत्य न रिश्ते-नाते सारे
कैसा भरम है, धरम का सबको, सत्य न जीने के ये सहारे
सुनों कि कहता, अंतर्मन है
सत्य, सिर्फ़ एक 'परिवर्तन' है
जो कि सतत है, और निरंतर
सत्य न धरती, सत्य न अम्बर

६२) पाओगे हर जगह मुझे अपना ही दिवाना

तहजीब में रहकर मुझे भी, प्यार सिखाना
लमहे ये जिंदगी के, साथ-साथ निभाना
खुद पे यकीं करो जरा, मुझपे यकीं करो
पाओगे हर जगह मुझे, अपना ही दिवाना

एक जिंदगी जिँहें हम, ख्यावों के दरमयां
बन जाएँ हम जुबानी, मोहब्बत की खुशनुमां
कहते हैं लोग जिंदगी, ये चार दिन की है
जी लो जरा हँस के इसे, न मुझको रुलाना
पाओगे हर जगह मुझे, अपना ही दिवाना

करते हैं लोग प्यार तो, लड़ते हैं जंग भी
ज़न्नत की जिंदगी में, रौशन हैं रंग भी
फ़ैसला इस प्यार का होने से पहले तुम
ऐ यार मेरे प्यार की, ना हार दिखाना
पाओगे हर जगह मुझे, अपना ही दिवाना

क्यों दूरियां तुम्हारी आँखों में अश्रु लातीं
क्यों रात-रात मेरी, नींदें चुरा ले जातीं
हम हैं सनम तुम्हारे कि कोई भी शक्र नहीं
तुमको कसम मेरी कि, मुझे अब ना सताना
पाओगे हर जगह मुझे, अपना ही दिवाना

६३) एक इंकलाब हूँ

कुछ भी नहीं मैं, माँ का एक मेहताब हूँ
एक दास्तां, कहानी, एक खुली किताब हूँ

अब तक बुझा नहीं जो, हवाओं के जुल्म से
दुश्मन हूँ अँधेरो का, एक नन्हा चराग हूँ

लम्हें ये ज़िन्दगी के, अदब में हैं, मदद में
मैं दरमयां दिलों के, मोहब्बत का राग हूँ

क्यों हूँ खफ़ा ज़माने से, हैं लोग पूँछते
लाखों सवाल का मैं, अकेला ज़बाब हूँ

हैरान हूँ मैं देख के, हालत ये मुल्क की
बदलाव की सीने में, सुलगती सी आग हूँ

हर एक हक़ीक़त से, रहता हूँ रु-ब-रु मैं
हर एक ख़बर का मैं, रखता हिसाब हूँ

जो जाति या मज़हब को, सियासत में धकेले
हर ऐसे शख्स के मैं, हमेशा खिलाफ हूँ

अब और न सहना पड़े, ये जुल्म दोस्तों
आओ मिलाओ हाँथ, मैं एक इंकलाब हूँ

६४) पीड़ा धरती की

लोगों के जुल्म को अब, कैसे बयाँ करूँ मैं, देखा यहाँ हूँ यमुना, रोते करीब से मैं ।
कैसे कहूँ कि मानव सबसे महान है ये, पढ़ता हूँ ख़बर में जो किस्से अजीब से मैं ॥

गंगा हुई है मैली, धरती भी हमसे रूठी ।
मौसम के गाल फूले, हवा भी बड़ी रूखी ॥
नाराज़ है तलैया, तालाब भी है रूठा ।
सूखे पड़े कुएँ हैं, हर आदमी है भूँखा ॥
बस्ती उजड़ चुकी है, रिश्ते बिखर चुके हैं ।
सूखी पड़ी हैं आँखें, बूढ़े गुजर चुके हैं ॥
खाने को अन्न है ना, बच्चे बिफर रहे हैं ।
बिस्तर पे माँ पड़ी है, हम भी सिहर रहे हैं ॥
आधी है रात बाकी, जलते दिए बुझे हैं ।
कुछ लोग हैं जो बाकी, मरते हुए बचे हैं ॥

खेतों में बचीं फसलें, सूरज जला रहा है ।
कहीं दूर एक शहर को, पानी डुबा रहा है ॥
पीपल के पत्तों की भी, अब साँस खो चुकी है ।
बरगद का पेड़ सूखा, अब छाँव खो चुकी है ॥
घर फूस के हमारे, जल हैं रहे बेचारे ।
सूरज की आँच से कुछ, हैं लड़ रहे बेचारे ॥
होंठों की मुस्कुराहट, अशकों में बह चुकी है ।
लोगों की सुगबुगाहट, होंठों पे ढह चुकी है ॥
सूनी पड़ी हैं सड़कें, बस धूल उड़ रही है ।
कुछ लोग लड़ रहे हैं, बंदूक तन रही है ॥
धुँधले हुए नज़ारे, आँखें ये बुझ रही हैं ।
पुरखों की सारी बातें, कानों में बज रही हैं ॥
कैसे संभालूँ सबको, खुद की न सुध रही है ।
लेना है साँस मुश्किल, धड़कन भी रुक रही है ॥

बंजर ज़मीं के कांटे, खंजर से चुभ रहे हैं।
थक हार मैं चुका हूँ, यमराज दिख रहे हैं ॥
कहीं आ रहा है तूफ़ान, कहीं आ रही सुनामी ।
गिनती भी हो सकी ना, कितने मिटे हैं प्राणी ॥
दहले हुए बचे दिल, मातम सा छा चुका है ।
मानों कि एक युग का, अब अंत आ चुका है ॥
धरती तड़प रही है श्रृंगार माँगती है।
नदियाँ बिलख रही हैं कुछ प्यार माँगती हैं ॥
अब होश में तो आओ, दौलत बनाने वालों ।
अब भी है वक्रत काफी, धरती को तुम बचा लो ॥
खुद बीज बो रहे हैं, हर ओर प्रदूषण के, शिकवा भी कर रहे फिर, अपने नसीब से हैं ।
कुछ लोग जो बचे हैं, वो गल रहे हैं गम में, कुछ कर रहे दुआ बस, अपने रहीम से हैं ॥

व्याकुल हुए हैं हम भी, दुनिया भी समझती है ।
है वार्मिंग ये ग्लोबल, ये बात खटकती है ॥
रोकें सभी, अभी से, अपनी धरा का दोहन ।
फिर से वही फिज़ा हो, हो बांसुरी हो मोहन ॥
मंज़र ये तबाही के, आने से पहले रोको ।
काटो ना वृक्ष जिन्दा, पौधे तमाम रोपो ॥
नदियों में, नहरों में अब, घोलो ना द्रव विषैले ।
अम्बर में विष भरी अब, कोई ना गैस फैले ॥
अब भी है वक्रत काफी, अब ही संभल के देखो ।
ये बात सच कही है, करके अमल तो देखो ॥

६५) शून्य से ब्रम्हाण्ड तक

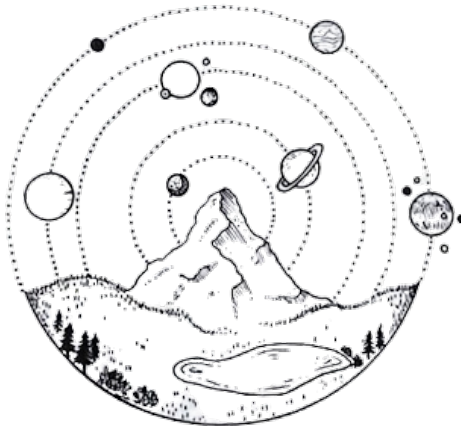
शून्य में भी ॐ स्वर की, गूँज विद्यमान है
ब्रम्हाण्ड के हर जीव में, अंतर्निहित ब्रम्हाण्ड है

शून्य इच्छाएँ हों, तन में शेष, श्वासों का श्वसन
अत्यंत सीधा है, सरल है, मोक्ष का सिद्धांत है

शून्य हों श्वासें परन्तु, शेष इच्छाएँ हो पुलकित
हर एक बंधन से विमुक्ति, मृत्यु का दृष्टांत है

दृश्य या अदृश्य हो, सृष्टि के हर एक सृजन में
है ऊर्जा का संवहन, और सर्वथा संवाद है

शिव-शक्ति से इस सृष्टि का, विध्वंस भी निर्माण भी
हर तत्व का है मूल, जिसका, आदि है ना अंत है



समय के साथ परिवर्तन, है माया का यही लक्षण
सत्य, समय से है परे, अर्थ यह नितान्त है

है सत्य, परिवर्तन निरन्तर, और मृत्यु घटना मात्र है
हर जीव का जीवन सतत, श्वांसों का शंखनाद है

जो हृदय स्पंदन, किसी की वेदना से हों व्यथित
हर श्वास वेद सूक्ति है, वो हृदय महाकाव्य है

भावहीन भक्ति, मात्र ढोंग का प्रमाण है
भाव के प्रभाव से, सिंचित शरीर-प्राण है

वायु-अग्नि-आकाश-जल, मिट्टी सृजन के श्रोत हैं
निर्माण से निष्प्राण के उपरांत मुक्ति मार्ग है

मस्तिष्क के अनुमोदनों पर, हो हृदय विरुद्ध जब
निश्चिन्त, तो स्वीकार कि आत्मा का अंतर्नाद है

